मामा वान्या

चार अंकों में ग्राम-जीवन के दृश्य

पात्र

सेरेबर्याकोव, अलेक्सान्द्र व्लादीमिरोविच – सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर

येलेना अन्द्रेयेव्ना – उसकी पत्नी, उम्र २७ साल

सोफ़्या अलेक्सान्द्रोव्ना (सोन्या) – प्रोफ़ेसर की पहली पत्नी से जन्मी बेटी

वोय्नीत्स्काया, मारीया वसील्येव्ना – प्रिवी कौंसिलर की विधवा, प्रोफ़ेसर की पहली पत्नी की मां

वोय्नीत्स्की, इवान पेत्रोविच – उसका बेटा, प्रोफ़ेसर का साला, सोन्या का मामा

आस्त्रोव, मिख़ाईल ल्वोविच – डाक्टर

तेलेगिन, इल्या इल्यीच – कंगाल हो चुका ज़मींदार

मरीना – बूढ़ी आया

नौकर

(घटना-स्थल – सेरेबर्याकोव की जागीर)

पहला अंक

(बाग़। चबूतरे सहित बाग़ का एक भाग नज़र आ रहा है। पुराने चिनार वृक्षों के नीचे रविश पर एक मेज़ है जहां चाय पीने की व्यवस्था है। बेंचें, कुर्सियां; एक बेंच पर गिटार रखी है। मेज़ के क़रीब एक झूला है। दिन के दो बजे के बाद का समय। मौसम ख़राब है। मोटी, मुश्किल से चलने-फिरनेवाली बूढ़ी आया मरीना समोवार के पास बैठी हुई जुर्राब बुन रही है और डाक्टर आस्त्रोव उसके आस-पास टहल रहा है)।

मरीना (चाय का गिलास देते हुए) : लो, पियो, भैया।

आस्त्रोव (अनिच्छा से गिलास लेता है) : मन नहीं चाहता।

मरीना : शायद वोद्का पीना चाहोगे?

आस्त्रोव : नहीं। मैं हर दिन वोद्का नहीं पीता। फिर इस वक़्त तो उमस भी है।

(ख़ामोशी)

कितने सालों से हम एक-दूसरे को जानते हैं, आया?

मरीना (सोचते हुए) : कितने सालों से? ज़रा याद करने दो... तुम यहां, इस इलाक़े में... कब आये थे?.. तब तो सोन्या की मां, वेरा पेत्रोव्ना ज़िन्दा थी। उसके होते तुम दो सर्दियों में हमारे यहां आते रहे थे... तो मतलब यह हुआ कि कोई ग्यारह साल हो गये हैं। **(सोचकर)** शायद ज़्यादा भी हो गये हों...

आस्त्रोव : बहुत ज़्यादा बदल गया हूं क्या मैं तब से?

मरीना : बहुत ज़्यादा। तब तुम जवान थे, ख़ूबसूरत थे और अब बुढ़ा गये हो। ख़ूबसूरती भी वह नहीं रही। फिर वोद्का भी पीते हो।

आस्त्रोव: हां ... दस साल में मैं दूसरा ही आदमी हो गया हूं। और इसकी वजह क्या है? काम के बोझ ने मेरी यह हालत कर दी है, आया। सुबह से रात तक दौड़-भाग करता रहता हूं, ज़रा भी चैन नहीं मिलता। रात को बिस्तर पर लेटता हूं तो मन में यही डर बना रहता है कि अभी कोई मुझे किसी बीमार के पास न घसीट ले जाये। जब से हम एक-दूसरे को जानते हैं, इस सारे वक़्त में मुझे एक भी दिन की फ़ुरसत नहीं मिली। भला कोई बुढ़ायेगा कैसे नहीं? फिर ज़िन्दगी भी ऊबभरी, बेतुकी और गन्दी है ... सारा रस निचोड़ लेती है यह ज़िन्दगी। चारों ओर झक्की, एकदम ख़ब्ती लोग हैं। दो-तीन साल इनके साथ रहो, हमें पता भी नहीं चलता और हम ख़ुद झक्की बन जाते हैं। ऐसा हाल हुए बिना रह ही नहीं सकता। (**अपनी लम्बी मूंछों को मरोड़ते हुए**) ओह कैसी बड़ी-बड़ी मूंछें हो गयी हैं ... बेहूदा मूंछें। मैं झक्की हो गया हूं, आया ... भगवान का शुक्र है कि मेरा दिमाग़ अभी तक अपनी जगह पर क़ायम है, उसे ज़ंग नहीं लगा, मगर भावनाओं में वह बात नहीं रही, वे बुझ-सी गयी हैं। मुझे कुछ भी तो नहीं चाहिये, किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, मैं किसी को प्यार नहीं करता ... सिर्फ़ तुम्हें ही प्यार करता हूं। (**उसका सिर चूमता है**) मैं जब छोटा था तो तुम्हारे जैसी ही मेरी भी आया थी।

मरीना: तुम शायद कुछ खाना चाहोगे?

आस्त्रोव। नहीं। तीन हफ़्ते हुए, ईस्टर के पहले मैं महामारी-वाले मालीत्स्कोये गांव में गया ... टाइफ़स का ख़ूब ज़ोर था ... झोंपड़ों में ढेरों लोग बीमार पड़े थे ... गन्दगी, बदबू, धुआं, बीमारों के साथ ही फ़र्श पर बछड़े-बछियां ... सूअर भी वहीं थे ... दिन भर वहां काम में जुटा रहा, मुंह में एक दाना तक नहीं डाला, घर लौटा तो वहां भी आराम नसीब नहीं हुआ – रेलवे

के कांटा बदलनेवाले को ले आये। मैंने ऑपरेशन करने के लिये उसे मेज़ पर लिटा दिया और वह क्लोरोफ़ार्म की बेहोशी में ही चल बसा। और जब ज़रूरत नहीं थी तब मेरे भीतर भावना जाग उठी, मेरी आत्मा ने मुझे धिक्कारा मानो मैंने जान-बूझकर ही उसकी हत्या कर डाली हो ... मैं आंखें मूंदकर ऐसे बैठ गया और सोचने लगा – सौ या दो सौ साल बाद जो इस दुनिया में रहेंगे और जिनके लिये हम अब मार्ग-प्रशस्त कर रहे हैं, वे कभी धन्यवाद देते हुए हमें याद करेंगे या नहीं? नहीं याद करेंगे न, आया!

मरीना: लोग याद नहीं करेंगे, लेकिन भगवान को यह सब याद रहेगा।

आस्त्रोव: धन्यवाद! कितनी अच्छी बात कही है तुमने।

(वोय्नीत्स्की प्रवेश करता है)

वोय्नीत्स्की (घर से बाहर निकलता है; नाश्ते के बाद वह सो चुका है और उसका चेहरा मुरझाया-सा है, बेंच पर बैठता है, अपनी बांकी टाई ठीक करता है): हां ...

(खामोशी)

हां ...

आस्त्रोव: खूब सो लिये?

वोय्नीत्स्की: हां ... खूब। **(जम्हाई लेता है)** जब से प्रोफ़ेसर अपनी बीवी के साथ यहां आकर रहने लगा है, ज़िन्दगी का ढर्रा बिल्कुल गड़बड़ हो गया है ... वक़्त पर सोता नहीं हूं, नाश्ते और दोपहर के भोजन के वक़्त सभी तरह की उल्टी-सीधी चीज़ें खाता हूं, शराब पीता हूं ... यह सब अच्छा नहीं!

पहले एक मिनट की भी फ़ुरसत नहीं होती थी, मैं और सोन्या दोनों काम करते थे – और अब देखो, अब सिर्फ़ अकेली सोन्या काम करती है, मैं सोता हूं, खाता हूं, शराब पीता हूं... यह बुरी बात है!

मरीना (सिर हिलाते हुए) : अजीब रंग-ढंग है यह! प्रोफ़ेसर उठता है बारह बजे और समोवार में सुबह से पानी उबलने लगता है, सभी उसकी प्रतीक्षा करते रहते हैं। जब तक ये दोनों नहीं आये थे, हम हमेशा दिन के बारह बजे के बाद भोजन करते थे, जैसा कि सभी घरों में होता है, मगर जब से ये आये हैं, शाम के छः बजे के बाद खाना खाया जाता है। प्रोफ़ेसर रात को पढ़ता-लिखता है और अचानक रात के एक बजे के बाद घण्टी बज उठती है... क्या हुआ, हाय राम! चाय चाहिये! अब उसके लिये लोगों को जगाओ, समोवार गर्माओ... अजीब रंग-ढंग है यह!

आस्त्रोव : क्या अभी बहुत दिनों तक ये लोग यहां रहनेवाले हैं?

वोय्नीत्स्की (सीटी बजाता है) : सौ साल तक। प्रोफ़ेसर ने यहीं बस जाने का फ़ैसला कर लिया है।

मरीना : अभी देखिये न। समोवार दो घण्टे से मेज़ पर रखा हुआ है और ये लोग घूमने चले गये।

वोय्नीत्स्की : आ रहे हैं, आ रहे हैं... परेशान नहीं होओ।

(आवाज़ें सुनाई देती हैं; सेरेबर्याकोव, येलेना अन्द्रेयेव्ना, सोन्या और तेलेगिन सैर के बाद बाग़ में से 'बाहर आते हैं)

सेरेबर्याकोव : बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर... बहुत ही अद्भुत दृश्य हैं।

तेलेगिन: कमाल के दृश्य हैं, हुजूर।

सोन्या: पापा, कल हम वन-प्रदेश में चलेंगे। चलना चाहेंगे न?

वोय्नीत्स्की: महानुभावो, चाय पीने के लिये पधारें!

सेरेबर्याकोव: दोस्तो, मेरे लिये तो मेरे अध्ययन-कक्ष में चाय भिजवाने की कृपा करें! मुझे आज अभी और कुछ काम करना है।

सोन्या: वन-प्रदेश तो आपको अवश्य ही बहुत अच्छा लगेगा...

(येलेना अन्द्रेयेव्ना, सेरेबर्याकोव और सोन्या घर में चले जाते हैं। तेलेगिन मेज़ की तरफ़ बढ़ता है और मरीना के पास बैठ जाता है)

वोय्नीत्स्की: बड़ी गर्मी है, दम घुट रहा है, मगर हमारा महान विद्वान ओवरकोट और गलोश* पहने है, छतरी लिये हुए है और हाथों पर दस्ताने चढ़ाये है।

आस्त्रोव: मतलब यह कि अपने को सहेज रहा है।

वोय्नीत्स्की: और वह कैसी ख़ूबसूरत है! ओह, कैसी ख़ूबसूरत है! अपनी सारी ज़िन्दगी में इससे बढ़कर सुन्दर औरत नहीं देखी।

तेलेगिन: मरीना तिमोफ़ेयेव्ना, मैं चाहे मैदान में जाता होता हूं, चाहे छायादार बाग़ में सैर करता हूं, चाहे इस मेज़ को देखता हूं, मुझे ऐसे आनन्द की अनुभूति होती है कि बयान से बाहर! मौसम कितना प्यारा है, पक्षी चहचहाते हैं, हम सब प्यार-मुहब्बत, हेल-मेल से रहते हैं–हमें और क्या चाहिये?

---

* पानी और नमी से बचाने के लिये जूतों के ऊपर पहने जानेवाले रबड़ के जूते। – अनु०

(चाय का गिलास लेते हुए) हृदय से आपका आभारी हूं।

वोय्नीत्स्की (मानो स्वप्न देखते हुए) : आंखें ... अद्‍भुत नारी है!

आस्त्रोव : कोई बात सुनाओ न, इवान पेत्रोविच।

वोय्नीत्स्की (उदासी से) : क्या सुनाऊं तुम्हें?

आस्त्रोव : नया कुछ नहीं?

वोय्नीत्स्की : कुछ नहीं। सब पुराना ही है। मैं भी वही हूं जो था। शायद पहले से बुरा हो गया हूं, क्योंकि बेहद काहिल हो गया हूं, कुछ भी करता-कराता नहीं, बस बूढ़े खूसट की तरह बड़बड़ाता रहता हूं। मेरी अम्मां, मेरी बूढ़ी छछून्दर, अभी भी नारी-मुक्ति के बारे में बेसिर-पैर की बातें किया करती है। उसकी एक नज़र क़ब्र पर लगी रहती है और दूसरी से अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण पुस्तकों में वह नवजीवन की किरण खोजा करती है।

आस्त्रोव : और प्रोफ़ेसर?

वोय्नीत्स्की : और प्रोफ़ेसर पहले की भांति सुबह से देर गयी रात तक अपने अध्ययन-कक्ष में बैठा लिखता रहता है। "दिमाग़ पर ज़ोर और ललाट पर बल डाल डालकर हम कवितायें रचते हैं। रचते हैं और न अपनी और न उनकी ही कहीं प्रशंसा सुनते हैं।" बेचारा काग़ज़! कहीं ज़्यादा अच्छा होता कि वह अपनी आत्मकथा लिखता। कितना बढ़िया विषय है यह! ज़रा ग़ौर करो – रिटायर्ड प्रोफ़ेसर, बूढ़ा खूसट, विद्वान की दुम ... गठिया, जोड़ों का दर्द, सिर दर्द के भयानक दौरे, ईर्ष्या और जलन के कारण बढ़ा हुआ जिगर ... विद्वान की यह दुम रहता है अपनी पहली बीवी की जागीर पर, सो भी मन मारकर क्योंकि शहर में रहने के लिये काफ़ी पैसे नहीं हैं। हमेशा अपनी क़िस्मत का रोना रोया करता है, यद्यपि, वास्तव में क़िस्मत

ने तो उसका ऐसा साथ दिया है कि कुछ पूछो नहीं। (**झल्लाहट से**) तुम ज़रा सोचो तो कि कितनी अच्छी तक़दीर है इसकी ! मामूली पादरी का बेटा, धार्मिक स्कूल में पढ़ा-पढ़ाया और उसने विद्वता की बड़ी-बड़ी उपाधियां हासिल कर लीं, विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष हो गया, महामहिम और उसके बाद सेनेटर का दामाद बन गया, आदि, आदि। वैसे, इस सबको गोली मारो। तुम इस बात की ओर ध्यान दो। यह आदमी कला के बारे में ख़ाक भी न जानते-समझते हुए पच्चीस साल से कला के बारे में पढ़ और लिख रहा है। पच्चीस साल से वह यथार्थवाद, प्रकृतवाद और इसी प्रकार की दूसरी बकवास के बारे में दूसरों के विचारों को रट रहा है। पच्चीस साल से वह वही कुछ पढ़ और लिख रहा है जिसे बुद्धिमान एक ज़माने से जानते हैं और मूर्खों की जिसमें कोई दिलचस्पी नहीं। मतलब यह कि वह पच्चीस साल से बेकार झक मार रहा है! लेकिन फिर भी उसे अपने बारे में कैसी-कैसी ग़लतफ़हमियां हैं! क्या नाज़-नख़रे हैं! वह रिटायर हो गया, लेकिन एक भी आदमी उसे नहीं जानता, ज़रा भी मशहूर नहीं है। इससे यही नतीजा निकलता है कि पच्चीस साल तक वह किसी दूसरे का हक़ दबाये रहा। लेकिन देखो तो – ऐसे अकड़ से चलता है मानो भगवान का साला हो !

आस्त्रोव : लगता है कि तुम उससे जलते हो।

वोय्नीत्स्की : हां, जलता हूं! और औरतों के मामले में भी कितना ख़ुशनसीब है यह! किसी डान-जुआन को भी कभी ऐसी कामयाबी नहीं मिली होगी! इसकी पहली बीवी, मेरी बहन, इतनी अच्छी, इतनी नम्र-विनम्र, ऐसी निर्मल थी जैसा यह नीलाकाश। वह दूसरों का भला चाहनेवाली थी, दिल की उदार थी और उस पर इतने लोग अपनी जान छिड़कते थे कि जितने

प्रोफ़ेसर के विद्यार्थी भी नहीं होंगे, – वह इसे ऐसे प्यार करती थी जैसे केवल पवित्र फ़रिश्ते अपने समान पवित्र और श्रेष्ठ प्राणियों को प्यार कर सकते हैं। मेरी मां, उसकी सास, अभी तक उसकी पूजा करती है, उसे वह अभी तक भगवान का जीता-जागता रूप लगता है। उसकी दूसरी बीवी ने – कितनी सुन्दर और समझदार है – तुम लोगों ने अभी-अभी उसे देखा – उस वक़्त उससे शादी की, जब वह बुढ़ा चुका था। उसने उसे अपनी जवानी, अपनी सुन्दरता, आज़ादी और अपनी सारी चमक-दमक भेंट कर दी। किसलिये ? किस कारण ?

आस्त्रोव : वह प्रोफ़ेसर के प्रति वफ़ादार तो है ?

वोय्नीत्स्की : अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि वफ़ादार है।

आस्त्रोव : अफ़सोस के साथ क्यों ?

वोय्नीत्स्की : क्योंकि वह वफ़ादारी शुरू से आख़िर तक ढोंग है। उसमें शब्द-जंजाल तो बहुत है, मगर तर्क नहीं। बूढ़े पति को धोखा देना, जो उसे फूटी आंखों नहीं सुहाता, – यह अनैतिकता है। किन्तु दूसरी ओर अपनी बेचारी जवानी और सच्ची भावना को दबाना – यह अनैतिकता नहीं।

तेलेगिन (रुआंसी आवाज़ में) : वान्या, जब तुम ऐसा कहते हो तो मुझे अच्छा नहीं लगता। सच तो यह है ... जो अपनी पत्नी या पति को धोखा देता है, वह भरोसे का आदमी नहीं, वह मातृभूमि के साथ भी दग़ा कर सकता है !

वोय्नीत्स्की (खीझकर) : चुप रहो बक्की, वेफ़र !

तेलेगिन : मेरी बात सुन लो, वान्या। मेरी बीवी शादी के अगले दिन ही अपने प्रेमी के साथ इसलिये भाग गयी कि मेरी सूरत पर बारह बजे हुए थे। लेकिन मैंने तो इसके बाद भी अपना कर्त्तव्य निभाया। मैं अभी तक उसे प्यार करता हूं और

उसके प्रति वफ़ादार हूं, मुझसे जितनी भी हो सकती है, मैं उनकी मदद करता हूं। मैंने अपनी सम्पत्ति उन बच्चों के पालन-पोषण के लिये दे दी जिन्हें उसने अपने प्रिय व्यक्ति के साथ रहते हुए जन्म दिया। मुझे ख़ुशी नहीं मिली, लेकिन मेरा गर्व बना रहा। और उसका, मेरी बीवी का क्या हुआ? जवानी ढल गयी, प्रकृति के नियमानुसार सुन्दरता की चमक फीकी पड़ गयी, उसका प्रिय व्यक्ति चल बसा... क्या रह गया उसके पास?

(सोन्या और येलेना अन्द्रेयेव्ना आती हैं। कुछ देर बाद किताब हाथ में लिये हुए मारीया वसील्येव्ना आती है। वह बैठकर पढ़ने लगती है, उसे चाय दी जाती है और वह किसी की तरफ़ देखे बिना उसे पीती रहती है)

सोन्या (जल्दी-जल्दी आया से): प्यारी आया, वहां किसान आये हैं। तुम जाकर उनसे बात कर लो, चाय मैं ख़ुद बना दूंगी...

(चाय बनाती है)

(आया चली जाती है। येलेना अन्द्रेयेव्ना अपना प्याला लेकर झूले पर बैठी हुई उसे पीती है)

आस्त्रोव (येलेना अन्द्रेयेव्ना से): मैं तो आपके पति के लिये यहां आया हूं। आपने लिखा था कि उनकी तबीयत बहुत ज़्यादा ख़राब है, गठिया और कोई दूसरी तकलीफ़ उन्हें परेशान कर रही है, लेकिन वह तो भले-चंगे हैं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: कल शाम को उनकी तबीयत बिगड़ गयी थी, उन्होंने पैरों में दर्द की शिकायत की थी, लेकिन आज तो अच्छे हैं...

आस्त्रोव: और मैं बीस मील तक ताबड़तोड़ घोड़ा दौड़ाता

आया हूं। मगर ख़ैर, कोई बात नहीं, पहली बार तो ऐसा हुआ नहीं। यही सही कि कल तक आपके यहां रहूंगा और कम से कम जी भरकर सो तो लूंगा।

सोन्या: यह तो बहुत अच्छा है। आप हमारे यहां रात बितायें, ऐसा तो बहुत कम ही होता है। आपने खाना भी नहीं खाया होगा ?

आस्त्रोव: जी, नहीं खाया।

सोन्या: तो खाना भी खा लीजियेगा। अब हम शाम के छ: बजे के बाद खाना खाते हैं। (**चाय पीती है**) चाय ठण्डी है !

तेलेगिन: समोवार गर्म नहीं रहा।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: कोई बात नहीं, इवान इवानोविच, हम ठण्डी चाय ही पी लेंगे।

तेलेगिन: जी, माफ़ी चाहता हूं... इवान इवानोविच नहीं, मेरा नाम इल्या इल्यीच तेलेगिन है या फिर कुछ लोग मेरे चेचकरू चेहरे की वजह से मुझे वेफ़र कहते हैं। कभी तो मैं सोन्या का धर्म-पिता बना था और महामहिम जी यानी आपके पति मुझे बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। जी, मैं अब आपके यहां, इसी जागीर पर रहता हूं... शायद आपने ध्यान दिया हो, मैं हर दिन आप सब के साथ ही भोजन करता हूं।

सोन्या: इल्या इल्यीच, हमारे सहायक, हमारा दायां बाज़ू हैं। (**स्नेहपूर्वक**) धर्म-पिता, लाइये आपको और चाय दे दूं।

मारीया वसील्येव्ना: ओह !

सोन्या: क्या हुआ, नानी ?

मारीया वसील्येव्ना: मैं अलेक्सान्द्र को यह बताना भूल गयी... याददाश्त तो बिल्कुल जवाब दे गयी... आज ख़ार्कोव से मुझे पावेल अलेक्सेयेविच का पत्र मिला है... उसने अपनी नयी पुस्तिका भेजी है...

आस्त्रोव : दिलचस्प है ?

मारीया वसील्येव्ना : दिलचस्प, लेकिन बड़ा अजीब मामला है। सात साल पहले उसने ख़ुद जिस चीज़ की वकालत की थी, अब उसी का खण्डन कर रहा है। यह भयानक बात है !

वोय्नीत्स्की : इसमें कुछ भयानक नहीं। अम्मां, चाय पियें।

मारीया वसील्येव्ना : लेकिन मैं बात करना चाहती हूं !

वोय्नीत्स्की : हम पचास सालों से बातें कर रहे हैं, बातें कर रहे हैं और पुस्तिकायें पढ़ रहे हैं। अब तो यह ख़त्म करना चाहिये।

मारीया वसील्येव्ना : न जाने क्यों, लेकिन जब मैं बात करती हूं तो तुम्हें उसे सुनना अच्छा नहीं लगता। बुरा नहीं मानना, जॉन, लेकिन पिछले एक साल में तुम इतने बदल गये हो कि मैं तुम्हें पहचान नहीं पाती ... तुम अपनी विशेष आस्थायें रखने-वाले आदमी थे, तुम्हारा उजला व्यक्तित्व था ...

वोय्नीत्स्की : जी हां ! मेरा उजला व्यक्तित्व था, जिससे किसी को उजाला नहीं मिला ...

(**ख़ामोशी**)

मैं उजला व्यक्तित्व था ... इससे अधिक ज़हरीला व्यंग्य नहीं हो सकता था। मैं अब सैंतालीस साल का हूं। आपकी तरह, पिछले साल तक मैं भी आपके इस हवाई फ़लसफ़े से जान-बूझकर अपनी आंखों पर परदा डालता रहा, ताकि वास्तविक जीवन से आंखें चुराता रहूं — और यह सोचता था कि अच्छा कर रहा हूं। लेकिन अब, काश आप यह जानतीं ! मैं इस दुख और झल्लाहट से सारी-सारी रात सो नहीं पाता कि ऐसी बेवक़ूफ़ी से वक़्त गंवा दिया, जबकि मैं वह सभी कुछ हासिल

9-912

कर सकता था जिससे मेरा बुढ़ापा अब इन्कार करता है!

सोन्या: मामा वान्या, ऊब महसूस हो रही है!

मारीया वसील्येव्ना (बेटे से): तुम तो सचमुच अपनी पहले की आस्थाओं को किसी चीज़ के लिये दोषी ठहरा रहे हो... लेकिन दोष उनका नहीं, ख़ुद तुम्हारा है। तुम यह भूले रहे हो कि आस्थायें अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखतीं, वे बेजान अक्षर हैं... काम करना चाहिये था।

वोय्नीत्स्की: काम? सभी तो आपके इस जनाब प्रोफ़ेसर की तरह चिरन्तन लिखती रहनेवाली मशीन नहीं बन सकते।

मारीया वसील्येव्ना: इन शब्दों से तुम्हारा क्या अभिप्राय है?

सोन्या (गिड़गिड़ाते हुए): नानी! मामा वान्या! मैं आपकी मिन्नत करती हूं!

वोय्नीत्स्की: मैं अब चुप हूं! चुप हूं और माफ़ी मांगता हूं।

(ख़ामोशी)

येलेना अन्द्रेयेव्ना: आज मौसम अच्छा है... गर्मी नहीं है...

(ख़ामोशी)

वोय्नीत्स्की: ऐसे मौसम में गले में फंदा डालकर झूल जाना बहुत अच्छा है...

(तेलेगिन गिटार को सुर करता है। मरीना घर के पास चक्कर लगाती हुई मुर्गियों को बुलाती है)

मरीना: आव, आव, आव...

सोन्या: प्यारी आया, किसान किसलिये आये थे?..

मरीना: फिर वही मामला, उसी परती ज़मीन के बारे में बात करने आये थे। आव, आव, आव...

सोन्या: यह तुम किसे बुला रही हो?

मरीना: चितकबरी मुर्ग़ी चूज़ों को साथ लेकर चली गयी... कहीं कौवे न उठा ले जायें चूज़ों को... (**जाती है**)

(तेलेगिन गिटार पर पोल्का नाच की धुन बजाता है, सभी चुपचाप सुनते हैं, नौकर आता है)

नौकर: डाक्टर साहब यहां हैं? (**आस्त्रोव से**) जनाब मिख़ाईल ल्वोविच, आपको बुलाने आये हैं।

आस्त्रोव: कहां से?

नौकर: फ़ैक्टरी से।

आस्त्रोव (झल्लाहट से): बहुत बहुत शुक्रिया। तो जाना होगा... (**नज़रों से अपनी टोपी ढूंढ़ता है**) बड़े अफ़सोस की बात है, बेड़ा ग़र्क़ हो...

सोन्या: सच, बड़ी अखरनेवाली बात है... आप फ़ैक्टरी से यहां भोजन करने आ जाइये।

आस्त्रोव: नहीं, देर हो जायेगी। कहां गयी... कहां चली गयी टोपी... (**नौकर से**) सुनो, मेहरबान, तुम मेरे लिये वोद्का का एक जाम तो ले ही आओ। (**नौकर जाता है**) कहां गयी... कहां चली गयी टोपी... (**टोपी मिल जाती है**) अस्त्रोव्स्की के किसी नाटक में बड़ी-बड़ी मूंछों और छोटी क्षमताओं-वाला एक पात्र है... वह मैं हूं। तो महानुभावो, आप सबसे इजाज़त चाहता हूं... (**येलेना अन्द्रेयेव्ना से**) अगर सोफ़्या अलेक्सान्द्रोव्ना के साथ आप कभी मेरे यहां आने की तकलीफ़ करेंगी तो मुझे दिली ख़ुशी होगी। मेरी तो छोटी-सी जागीर है, कोई ४५ हेक्टर की। लेकिन अगर दिलचस्पी रखती हों तो ऐसा बढ़िया बाग़ और पेड़-पौधों की ऐसी नर्सरी आपको

यहां सैकड़ों मील तक कहीं देखने को नहीं मिलेगी। मेरी जागीर के पास ही सरकारी वन-प्रदेश है... वहां का वन-रक्षक बूढ़ा है, हमेशा बीमार रहता है और इसलिये वास्तव में तो मैं ही सारे काम-काज की देख-भाल करता हूं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: हां, मैं सुन चुकी हूं कि आप जंगलों को बहुत् प्यार करते हैं। निश्चय ही आप इस क्षेत्र में बड़ा उपयोगी काम कर सकते हैं। किन्तु क्या इससे आपके असली पेशे में बाधा नहीं पड़ती? आख़िर आप तो डाक्टर हैं।

आस्त्रोव: यह तो सिर्फ़ भगवान ही जानता है कि कौन-सा हम लोगों का असली पेशा है।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: और यह दिलचस्प भी है?

आस्त्रोव: हां, दिलचस्प है।

वोय्नीत्स्की (व्यंग्यपूर्वक): बेहद!

येलेना अन्द्रेयेव्ना (आस्त्रोव से): आप अभी जवान आदमी हैं, देखने में... छत्तीस... सैंतीस के लगते हैं... जितना आप कह रहे हैं, यह उतना दिलचस्प नहीं होना चाहिये। हर वक़्त जंगल ही जंगल। मेरे ख़्याल में तो आपको ऊब महसूस होने लगती होगी।

सोन्या: नहीं, यह बहुत ही दिलचस्प है। मिख़ाईल ल्वोविच हर साल नये वन रोपते हैं और इसके लिये उन्हें तो कांस्य-पदक और प्रमाणपत्र भी मिल चुका है। यह अपना पूरा ज़ोर लगाते हैं कि पुराने वनों को बरबाद न होने दें। इनकी बातें सुनने के बाद तो आप पूरी तरह इनसे सहमत हो जायेंगी। इनका कहना है कि जंगल धरती का शृंगार हैं, कि वे इन्सान को सौन्दर्य को समझने की शिक्षा देते हैं और उसमें उदात्त मनःस्थिति पैदा करते हैं। वन कठोर जलवायु को कोमलता प्रदान करते हैं। जिन देशों में जलवायु इतना कठोर नहीं है,

वहां प्रकृति से जूझने के लिये कम शक्ति ख़र्च करनी पड़ती है और इसलिये वहां इन्सान अधिक नर्म तथा कोमल है। वहां लोग सुन्दर और लचीले हैं, भावुक हैं, उनकी बोली प्यारी है और उनकी भंगिमा-भाव में सजीलापन है। वहां विज्ञान और कला फलते-फूलते हैं, उनका दर्शन अवसाद में डूबा हुआ नहीं है, नारी के प्रति उनका रवैया सच्चे सूरमाओं जैसा है...

वोय्नीत्स्की (**हंसते हुए**): वाह, वाह!.. यह सब कुछ बहुत अच्छा है, लेकिन ये बातें हमें क़ायल नहीं करतीं। इसलिये (**आस्त्रोव से**) मेरे दोस्त, तुम मुझे तो लकड़ियों से चूल्हा गर्माते और बाड़ा बनाते रहने दो।

आस्त्रोव: तुम चूल्हा तो पीट से भी गर्मा सकते हो और बाड़ा बना सकते हो पत्थरों से। मैं मानता हूं कि ज़रूरत होने पर जंगलों को काटा जा सकता है, लेकिन उन्हें बरबाद किसलिये किया जाये? रूस के जंगल कुल्हाड़ों की चोटों से टूट-टूट कर गिरते हैं, करोड़ों वृक्ष नष्ट होते हैं, जानवरों और परिन्दों का कहीं कोई ठौर-ठिकाना नहीं रहता, नदियां छिछली हो जाती हैं और सूखती हैं, बहुत ही मनोहर प्राकृतिक दृश्य सदा के लिये लुप्त हो जाते हैं और वह सब इसलिये कि काहिल इन्सान झुककर ज़मीन से ईंधन नहीं उठाना चाहता। (**येलेना अन्द्रे-येव्ना से**) क्या यह ठीक नहीं है, श्रीमती जी? ऐसे सौन्दर्य को चूल्हे में जलाने, उसे नष्ट करने के लिये जिसे हम रच नहीं सकते, दिल-दिमाग़ न रखनेवाला वहशी होना ज़रूरी है। इन्सान को सूझ-बूझ और रचनात्मक शक्ति दी गयी है ताकि उसे जो कुछ मिला है वह उसकी वृद्धि करे। लेकिन उसने तो अभी तक कुछ रचने के बजाय नष्ट ही किया है। जंगल अधिकाधिक कम होते जाते हैं, नदियां सूख रही हैं, परिन्दे-जानवर दूसरी जगहों पर चले गये, जलवायु बिगड़ गया और

धरती हर दिन कम उपजाऊ तथा भद्दी होती जाती है। (**वोय्नीत्स्की से**) तुम मुझे व्यंग्यपूर्वक देख रहे हो और जो कुछ मैं कह रहा हूं, तुम्हें वह सब संजीदा नहीं लगता। हो सकता है... हो सकता है कि यह वास्तव में ही ख़ब्त हो, सनक हो, लेकिन जब मैं किसानों के उन जंगलों के पास से गुज़रता हूं जिन्हें मैंने काटने से बचाया या फिर जब मैं अपने उस नौउम्र जंगल की सरसराहट सुनता हूं जिसे मैंने अपने हाथों से उगाया है, तो यह महसूस करता हूं कि जलवायु कुछ हद तक मेरे वश में है और अगर एक हज़ार साल बाद इन्सान सुखी होगा तो इसमें थोड़ा-सा मेरा भी योग होगा। जब मैं भोज वृक्ष रोपता हूं और बाद में उसे हरा होते तथा हवा में डोलते देखता हूं तो मेरी छाती गर्व से फूल उठती है और मैं... (**ट्रे में वोद्का का जाम लेकर आनेवाले नौकर को देखकर**) लेकिन (**वोद्का पीता है**) अब मुझे जाना चाहिये। शायद यह सब कोरी झक है। सब को नमस्कार करता हूं! (**घर की तरफ़ जाता है**)

सोन्या (**उसकी बांह में बांह डालकर उसके साथ जाती है**): अब फिर कब आयेंगे आप हमारे यहां?

आस्त्रोव: मालूम नहीं...

सोन्या: फिर एक महीने बाद?..

(आस्त्रोव और सोन्या घर में चले जाते हैं। मारीया वसील्येव्ना और तेलेगिन मेज़ के पास रह जाते हैं। येलेना अन्द्रेयेव्ना और वोय्नीत्स्की चबूतरे की तरफ़ जाते हैं)

येलेना अन्द्रेयेव्ना: इवान पेत्रोविच, आपका आचरण आज फिर बहुत बेहूदा रहा। क्या ज़रूरत थी आपको मारीया वसील्येव्ना को चिढ़ाने की, चिरन्तन लिखती रहनेवाली मशीन की चर्चा करने की? नाश्ते के वक़्त आपने अलेक्सान्द्र से भी आज

फिर नोक-झोंक की। यह सब कितना छोटापन है!

वोयनीत्स्की: लेकिन अगर मैं उससे नफ़रत करता हूं, तो!

येलेना अन्द्रेयेव्ना: अलेक्सान्द्र से नफ़रत करने की कोई बात नहीं, वह वैसा ही है जैसे दूसरे सब। आपसे बुरा नहीं है।

वोयनीत्स्की: काश, आप अपना चेहरा और अपनी गति-विधियों को देख सकतीं... कितनी काहिल हैं आप जीने के मामले में! ओह, कितनी काहिल!

येलेना अन्द्रेयेव्ना: ओह, काहिली और ऊब! सभी मेरे पति को कोसते हैं, सभी बड़े अफ़सोस से मेरी तरफ़ देखते हैं – बेचारी, क़िस्मत की मारी, उसका पति बुड्ढा है! मुझमें यह दिलचस्पी – ओह, कितनी अच्छी तरह से मैं इसे समझती हूं! आस्त्रोव ने अभी-अभी बिल्कुल ठीक कहा था – आप सभी कैसी बेसमझी से जंगलों को काटते हैं और जल्द ही इस धरती पर कुछ भी नहीं रह जायेगा। बिल्कुल इसी तरह आप बेसमझी से इन्सान को भी नष्ट करते हैं और जल्द ही आपकी मेहरबानी से इस धरती पर न तो वफ़ादारी रहेगी, न पवित्रता और न आत्म-बलिदान की क्षमता। अगर कोई औरत आपकी नहीं तो आप उसमें दिलचस्पी लिये बिना क्यों नहीं रह सकते? वह इसलिये – डाक्टर का कहना बिल्कुल ठीक है – कि आप सबके भीतर बरबादी का शैतान जमा बैठा है। आपको न जंगलों, न पक्षियों, न औरतों और न खुद एक-दूसरे पर रहम आता है।

वोयनीत्स्की: मुझे यह फ़लसफ़ा पसन्द नहीं!

• **(ख़ामोशी)**

येलेना अन्द्रेयेव्ना: इस डाक्टर का थका-थका और खीझा-खीझा चेहरा है। दिलचस्प चेहरा है। सोन्या को स्पष्टतः वह अच्छा लगता है, वह उसे प्यार करती है और मैं उसे समझ

सकती हूं। मेरे होते-होते वह तीन बार यहां आ चुका है, लेकिन मैं शर्मीली हूं और इसलिये एकबार भी मैंने उससे ढंग से बात नहीं की, उसके प्रति आत्मीयता नहीं दिखाई। उसने सोचा होगा कि मैं बदमिज़ाज हूं। इवान पेत्रोविच, हम शायद इसीलिये इतने अच्छे मित्र हैं कि दोनों ही दूसरों को उबानेवाले, दूसरों में ऊब पैदा करनेवाले लोग हैं! उबानेवाले! मेरी ओर ऐसे नहीं देखें, मुझे यह अच्छा नहीं लगता।

वोय्नीत्स्की : अगर मैं आपको प्यार करता हूं तो किसी दूसरे ढंग से देख ही कैसे सकता हूं? आप मेरी ख़ुशी हैं, ज़िन्दगी हैं, मेरी जवानी हैं! मैं जानता हूं कि आपकी ओर से प्रतिदान पाने की बहुत कम, लगभग कोई सम्भावना नहीं, लेकिन मुझे कुछ भी नहीं चाहिये, सिर्फ़ आपको देख लूं, आपकी आवाज़ सुन लूं, मेरे लिये इतना ही काफ़ी है...

येलेना अन्द्रेयेव्ना : धीरे बोलिये, कोई सुन लेगा!

(घर की ओर जाते हैं)

वोय्नीत्स्की (उसके पीछे-पीछे जाते हुए) : मुझे अपने प्यार की चर्चा कर लेने दीजिये, मुझे दुतकारिये नहीं और मेरे लिये यही सबसे बड़ा सुख होगा...

येलेना अन्द्रेयेव्ना : यह तो अच्छी ख़ासी यातना है...

(दोनों घर में जाते हैं)

(तेलेगिन गिटार के तारों को ज़ोर से झनझनाकर पोल्का लोक-नृत्य की धुन बजाता है। मारीया वसील्येव्ना पुस्तिका के हाशियों पर कुछ लिखती है)

(परदा गिरता है)

दूसरा अंक

(सेरेबर्याकोव के घर में भोजन-कक्ष। रात का समय। बाग़ में चौकीदार के डंडा खटखटाने की आवाज़ सुनाई देती है। सेरेबर्याकोव खुली खिड़की के सामने आरामकुर्सी पर बैठा हुआ ऊंघ रहा है। येलेना अन्द्रेयेव्ना भी उसके पास बैठी हुई ऊंघ रही है।)

सेरेबर्याकोव (जागकर) : यहां कौन है ? तुम हो, सोन्या ?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : मैं हूं।

सेरेबर्याकोव : तुम लेना ... ऐसा ज़ोर का दर्द है कि बर्दाश्त के बाहर !

येलेना अन्द्रेयेव्ना : तुम्हारा कम्बल फ़र्श पर गिर गया है। **(उसके पैरों पर अच्छी तरह से कम्बल लपेट देती है)** अलेक्सान्द्र, मैं खिड़की बन्द कर देती हूं।

सेरेबर्याकोव : नहीं, मुझे घुटन महसूस होती है ... मैं अभी ऊंघ गया था और मुझे सपने में यह दिखाई दिया मानो मेरी बायीं टांग मेरी अपनी नहीं रही। बहुत ही तेज़ दर्द से मेरी आंख खुल गयी। नहीं, यह गाऊट नहीं, गठिया है। क्या वक़्त है ?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : बारह बजकर बीस मिनट।

(ख़ामोशी)

सेरेबर्याकोव : सुबह पुस्तकालय में बात्युशकोव की किताब ढूंढ़ लेना। मेरे ख़्याल में वह हमारे यहां है।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : क्या ?

सेरेबर्याकोव : सुबह बात्युशकोव की किताब ढूंढ़ लेना। मुझे

याद पड़ता है कि वह हमारे यहां है। लेकिन मुझे सांस लेने में इतनी तकलीफ़ क्यों हो रही है?

येलेना अन्द्रेयेव्ना: तुम थक गये हो। दो रातों से सो नहीं रहे।

सेरेबर्याकोव: कहते हैं कि गाऊट की वजह से तुर्गेनेव को दिल की बीमारी हो गयी थी। मुझे डर है कि कहीं मेरे साथ भी यही न हो। यह कमबख़्त, मुसीबत का मारा बुढ़ापा। इस पर शैतान की मार। बुढ़ा जाने पर मैं ख़ुद अपने से नफ़रत करने लगा हूं। और आप सबको भी मुझे देखकर घृणा होती होगी।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: तुम अपने बुढ़ापे की ऐसे ढंग से चर्चा कर रहे हो मानो हम सभी तुम्हारे बुढ़ा जाने के लिये दोषी हैं।

सेरेबर्याकोव: सबसे पहले तो तुम ही को मैं अच्छा नहीं लगता।

(येलेना अन्द्रेयेव्ना उसके पास से हटकर दूर जा बैठती है)

निश्चय ही तुम्हारा ऐसा करना ठीक है। मैं मूर्ख नहीं हूं, सब कुछ समझता हूं। तुम जवान हो, तन्दरुस्त हो, ख़ूबसूरत हो, ज़िन्दगी के मज़े लूटना चाहती हो और मैं बूढ़ा हूं, लगभग लाश हूं। तुम क्या सोचती हो, मैं यह नहीं समझता? बेशक यह बेवक़ूफ़ी है कि मैं अभी तक ज़िन्दा हूं। लेकिन तुम लोग थोड़ा सब्र करो, जल्द ही मैं तुम सबको मुक्त कर दूंगा। बहुत समय तक नहीं खींचना पड़ेगा मुझे अपनी सांसों के बोझ को।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: अब मेरे सब्र का प्याला छलक रहा है... भगवान के लिये चुप हो जाओ।

सेरेबर्याकोव: मतलब यह कि मेरी वजह से सभी के सब्र का प्याला छलक रहा है, सभी ऊब रहे हैं, अपनी जवानी को नष्ट कर रहे हैं। सिर्फ़ मैं ही ज़िन्दगी के मज़े लूट रहा हूं और ख़ुश

हूं। हां, हां, बेशक!

येलेना अन्द्रेयेव्ना : चुप हो जाओ! तुमने मुझे सता मारा है!

सेरेबर्याकोव : मैंने सभी को सता मारा है। निश्चय ही।

येलेना अन्द्रेयेव्ना (रोते हुए) : बर्दाश्त के बाहर है! यह बताओ कि तुम मुझसे चाहते क्या हो?

सेरेबर्याकोव : कुछ भी नहीं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : तो चुप हो जाओ। मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूं।

सेरेबर्याकोव : अजीब बात है, इवान पेत्रोविच या यह बूढ़ी उल्लू मारीया वसील्येव्ना बोलने लगती है तो किसी को परेशानी नहीं होती, सब सुनते रहते हैं। लेकिन मैं अगर एक शब्द भी कह देता हूं तो सभी की मानो तक़दीर फूट जाती है। मेरी तो आवाज़ भी अच्छी नहीं लगती। चलो मान लिया कि मैं किसी को अच्छा नहीं लगता, मैं स्वार्थी हूं, तानाशाह हूं, लेकिन क्या बुढ़ापे में भी मुझे स्वार्थी होने का अधिकार नहीं है? क्या मैं इसके लायक़ नहीं हूं? मैं पूछता हूं कि क्या मुझे चैन से बुढ़ापा बिताने का हक़ नहीं, क्या मैं अपने प्रति लोगों के चिन्ताशील होने का अधिकार नहीं रखता हूं?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : कोई भी तुम्हारे अधिकारों को चुनौती नहीं दे रहा है।

(हवा के कारण खिड़की फटाक से बन्द होती है)

हवा चल पड़ी है, मैं खिड़की बन्द कर देती हूं। (**बन्द करती है**) अभी बारिश होगी। कोई भी तुम्हारे अधिकारों को चुनौती नहीं दे रहा है।

(**ख़ामोशी, बाग़ में चौकीदार डंडा बजाता और गाना गाता है**)

सेरेबर्याकोव: ज़िन्दगी भर अनुसन्धान करने, अपने अध्ययन-कक्ष, व्याख्यान-भवन, प्रतिष्ठित साथियों का अभ्यस्त रहने के बाद अचानक अपने को इस मक़बरे में पाना, हर दिन मूर्ख लोगों को अपने सामने देखना और बेहूदा बातें सुनना ... मैं जीना चाहता हूं, मुझे सफलतायें पाना अच्छा लगता है, मैं ख्याति और कोलाहल को प्यार करता हूं, लेकिन यहां – जैसे कि निर्वासित कर दिया गया हूं। हर क्षण अतीत की याद में तड़पना, दूसरों को आगे बढ़ते देखना, मौत से भयभीत रहना ... नहीं सहन कर सकता मैं यह! मुझमें शक्ति नहीं! और यहां तुम लोग मेरे बुढ़ापे को भी क्षमा नहीं करना चाहते!

येलेना अन्द्रेयेव्ना: थोड़ा रुक जाओ, सब्र करो – पांच-छः साल के बाद में भी बुढ़िया हो जाऊंगी।

(**सोन्या आती है**)

सोन्या: पापा, आपने ख़ुद ही तो डाक्टर आस्त्रोव को बुलवा भेजने को कहा था और जब वह आ गया तो उससे मिलने से इन्कार कर दिया। यह अच्छा नहीं। बेकार उसे परेशान किया ...

सेरेबर्याकोव: क्या करूं मैं तुम्हारे उस आस्त्रोव का? वह उतनी ही डाक्टरी जानता है जितनी मैं खगोल विद्या।

सोन्या: आपके इस गठिया के लिये मेडिकल कालेज के सारे प्रोफ़ेसरों को तो नहीं बुलाया जा सकता।

सेरेबर्याकोव: मैं इस झक्की से तो बात भी नहीं करूंगा।

सोन्या: यह तो जैसी आपकी मर्ज़ी। (**बैठ जाती है**) मेरी बला से।

सेरेबर्याकोव: क्या वक़्त है?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : बारह से कुछ अधिक।

सेरेबर्याकोव : घुटन महसूस हो रही है... सोन्या, मेज़ से मुझे दवाई की शीशी दे दो।

सोन्या : अभी। **(शीशी देती है)**

सेरेबर्याकोव (झल्लाते हुए) : ओह, यह नहीं! क्या मजाल कि कभी कोई ठीक चीज़ मिल जाये!

सोन्या : कृपया मुझे ऐसे नखरे नहीं दिखाइये। शायद किसी और को ये अच्छे लगते हों, लेकिन मेहरबानी करके मुझे इनसे दूर रखिये! मुझे यह सब पसन्द नहीं। इसके अलावा मेरे पास वक़्त भी नहीं है, मुझे कल तड़के ही उठना है, घास कटवानी है।

(ड्रेसिंग गाउन पहने और मोमबत्ती लिये वोय्नीत्स्की आता है)

वोय्नीत्स्की : बाहर तो तूफ़ान आने को है।

(बिजली चमकती है)

देखा, क्या रंग हैं मौसम के! येलेना और सोन्या, आप दोनों जाकर सो जायें। आपकी जगह मैं यहां बैठा रहूंगा।

सेरेबर्याकोव (घबराकर) : नहीं, नहीं! मुझे इसके साथ नहीं छोड़िये। नहीं! यह बातें कर करके मेरा सिर खा जायेगा।

वोय्नीत्स्की : लेकिन इन्हें भी तो चैन मिलना चाहिये! दूसरी रात जा रही है इनकी सोये बिना।

सेरेबर्याकोव : बेशक जाकर सो जायें, लेकिन तुम भी चले जाओ। धन्यवाद। तुमसे बिनती करता हूं। हमारी पुरानी दोस्ती की ख़ातिर तुम मेरी बात मान लो। हम फिर कभी बातें कर लेंगे।

वोय्नीत्स्की (व्यंग्यपूर्वक हंसते हुए) : हमारी पुरानी दोस्ती... पुरानी...

सोन्या: चुप हो जाइये, मामा वान्या।

सेरेबर्याकोव (पत्नी से): मेरी प्यारी, मुझे इसके साथ नहीं छोड़ो। वह मेरा सिर खा जायेगा।

वोय्नीत्स्की: यह सब तो अब मज़ाक़ बनता जा रहा है।

(मोमबत्ती लिये हुए मरीना आती है)

सोन्या: प्यारी आया, तुम तो सो जाओ। काफ़ी देर हो चुकी है।

मरीना: समोवार अभी तक मेज़ पर है। सोऊं भी तो कैसे?

सेरेबर्याकोव: सभी जाग रहे हैं, सभी परेशान हो रहे हैं, सिर्फ़ मैं ही मज़े कर रहा हूं।

मरीना (सेरेबर्याकोव के पास आती है, प्यार से): क्यों, भैया? दर्द हो रहा है? मेरी अपनी भी टांगें टूटी जा रही हैं, बुरी तरह से टूटी जा रही हैं। **(कम्बल ठीक करती है)** यह बहुत पुरानी बीमारी है आपकी। भगवान को प्यारी हो गयी सोन्या की मां, वेरा पेत्रोव्ना, कभी-कभी तो सारी रात नहीं सोती थी, तड़पती रहती थी... बहुत ही प्यार करती थी न आपको...

(ख़ामोशी)

बूढ़े और बच्चे एक जैसे होते हैं, चाहते हैं कि कोई उन पर तरस खाये, लेकिन बूढ़ों पर किसी को दया नहीं आती। **(सेरेब-र्याकोव का कंधा चूमती है)** चलो भैया, बिस्तर पर चलो... चलो, प्यारे... मैं तुम्हें लाइम के पत्तों की चाय पिलाऊंगी, तुम्हारी टांगों को गर्मा दूंगी... तुम्हारे लिये भगवान से प्रार्थना करूंगी...

सेरेबर्याकोव (द्रवित होकर) : चलो, मरीना।

मरीना : मेरी अपनी भी टांगें टूट रही हैं, बुरी तरह से टूट रही हैं! **(सोन्या के साथ उसे ले जाती है)** वेरा पेत्रोव्ना तड़पती रहती थी, लगातार रोती रहती थी ... तुम, प्यारी सोन्या, तुम तब छोटी-सी थीं, बुद्धू थीं ... चलो, चलो, भैया ...

(सेरेबर्याकोव, सोन्या और मरीना चले जाते हैं)

येलेना अन्द्रेयेव्ना : बेहद दुखी हो गयी हूं मैं इसके साथ। बड़ी मुश्किल से खड़ी रह पा रही हूं।

वोय्नीत्स्की : आप उसके साथ दुखी हो गयी हैं और मैं ख़ुद अपने आप से। तीन रातों से सो नहीं रहा हूं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : क़िस्मत का मारा है यह घर। आपकी मां अपनी पुस्तिकाओं और प्रोफ़ेसर के सिवा बाक़ी सभी कुछ से नफ़रत करती है। प्रोफ़ेसर झल्लाया रहता है, मुझ पर विश्वास नहीं करता, आप से डरता है। सोन्या अपने बाप से चिढ़ी-चिढ़ी रहती है, मुझसे चिढ़ती है और दो हफ़्तों से मुझसे बोलती तक नहीं। आप मेरे पति से नफ़रत और अपनी मां की खुले रूप से उपेक्षा करते हैं। मैं खीझी हुई हूं और आज कोई बीस बार रो चुकी हूं ... क़िस्मत का मारा है यह घर।

वोय्नीत्स्की : फ़लसफ़े को रहने दीजिये!

येलेना अन्द्रेयेव्ना : इवान पेत्रोविच, आप पढ़े-लिखे और समझदार आदमी हैं। मुझे लगता है कि आपको यह समझना चाहिये कि दुनिया लुटेरे-डाकुओं और आग लगने की घटनाओं से नहीं, बल्कि घृणा, शत्रुता और इस तरह के सभी छोटे-मोटे झगड़ों से तबाह होती है ... आपका काम बड़बड़ाना नहीं, बल्कि सबके बीच सुलह करवाना होना चाहिये।

वोय्नीत्स्की: सबसे पहले तो आप ख़ुद मुझसे ही मेरी सुलह करवा दीजिये! मेरी प्यारी ... (**उसका हाथ चूमता है**)

येलेना अन्द्रेयेव्ना: रहने दीजिये! (**हाथ खींच लेती है**) जाइये यहां से!

वोय्नीत्स्की: अभी पानी बरस जायेगा, प्रकृति की हर चीज़ में ताज़गी आ जायेगी और वह राहत की सांस लेगी। तूफ़ान सिर्फ़ मुझे ही ताज़गी नहीं देगा। दिन-रात यही विचार भूत की तरह मेरा गला घोंटता रहता है कि मेरी ज़िन्दगी हमेशा के लिये बरबाद हो चुकी है। अतीत नहीं है, वह व्यर्थ की चीज़ों पर नष्ट कर दिया गया और वर्त्तमान अपने बेतुकेपन के कारण भयानक है। तो यह मेरी ज़िन्दगी और मेरा प्यार – कहां ले जाऊं मैं इन्हें, क्या करूं मैं इनका? गड्ढे में गिर जानेवाली सूरज की किरण की भांति मेरी भावना व्यर्थ ही मर रही है और मैं ख़ुद भी मर रहा हूं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: जब आप अपने प्यार की बात करते हैं तो मुझे कुछ भी नहीं सूझता और मैं यह नहीं जानती कि क्या कहूं। क्षमा कीजिये मैं आपसे कुछ भी नहीं कह सकती। (**जाना चाहती है**) शुभरात्रि।

वोय्नीत्स्की (**उसका रास्ता रोककर**): काश, आपको यह मालूम होता कि इस विचार से मुझे कितना दुख होता है कि इस घर में मेरे निकट ही एक और ज़िन्दगी – आपकी ज़िन्दगी बरबाद हो रही है! किस चीज़ की प्रतीक्षा है आपको? कौन-सा लानत का मारा फ़लसफ़ा आपके आड़े आ रहा है? आप समझिये तो, समझिये तो ...

येलेना अन्द्रेयेव्ना (**टकटकी बांधकर उसे देखती है**): इवान पेत्रोविच, आप नशे में हैं!

वोय्नीत्स्की: हो सकता है, हो सकता है ...

येलेना अन्द्रेयेव्ना : डाक्टर कहां है ?

वोय्नीत्स्की : वहां ... मेरे कमरे में सो रहा है। हो सकता है, हो सकता है ... सब कुछ हो सकता है !

येलेना अन्द्रेयेव्ना : आपने आज भी पी है ? किसलिये ?

वोय्नीत्स्की : इसलिये कि पीकर आदमी ज़िन्दा तो लगता है ... मेरे आड़े नहीं आइये।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : पहले आप कभी नहीं पीते थे और कभी इतना ज़्यादा नहीं बोलते थे ... जाकर सो जाइये ! आपके साथ मुझे ऊब महसूस होती है।

वोय्नीत्स्की (उसका हाथ चूमता है) : मेरी प्यारी ... मेरी अनुपमा !

येलेना अन्द्रेयेव्ना (खीझकर) : मुझे परेशान नहीं कीजिये ! आख़िर तो यह सब कुछ बहुत भोंड़ा है। **(जाती है)**

वोय्नीत्स्की (स्वगत) : चली गयी ...

(ख़ामोशी)

दस साल पहले दिवंगता बहन के यहां मेरी इससे भेंट हुई थी। तब यह सत्रह साल की थी और मैं था सैंतीस का। तब क्यों मुझे इससे प्यार नहीं हुआ और मैंने विवाह का प्रस्ताव नहीं किया ? तब तो यह बिल्कुल सम्भव था ! और इस वक़्त यह मेरी बीवी होती ... हां ... इस वक़्त बादल की गरज और बिजली की कड़क से हम दोनों की आंख खुल गयी होती – यह तूफ़ान से डर जाती और मैं इसे अपनी बांहों में भरकर फुस-फुसाता : "डरो नहीं, मैं यहां हूं।" ओह, कितने प्यारे विचार हैं, कितना अच्छा लग रहा है, मैं तो हंस भी रहा हूं ... लेकिन, हे भगवान, मेरे दिमाग़ में सारे विचार गड्ड-मड्ड हुए जा रहे

10-912

हैं … मैं बूढ़ा क्यों हूं? किसलिये यह मुझे नहीं समझती? इसका शब्दाडम्बर, बेतुकी नैतिकता, दुनिया के नष्ट होने के बारे में ऊल-जलूल, बेमानी और मरे-मरे विचार – बहुत ही नफ़रत है मुझे इस सबसे।

(ख़ामोशी)

ओह, कितना धोखा हुआ है मेरे साथ! मैं इस प्रोफ़ेसर को, गठिये के इस तुच्छ रोगी को पूजता था, इसके लिये कोल्हू के बैल की तरह काम करता था! मैं और सोन्या इस जागीर से आख़िरी बूंद तक निचोड़ते थे। हम कुलकों* की तरह वनस्पति तेल, मटर-चने और छेना बेचते थे, ख़ुद भर पेट नहीं खाते थे ताकि कौड़ी-कौड़ी, दमड़ी-दमड़ी जोड़कर हज़ारों रूबल जमा करें और इसे भेजें। मैं इस पर और इसकी विद्वता पर गर्व करता था, हर वक़्त इसी के बारे में सोचता हुआ, इसे ही सांसों में बसाकर जीता था! वह जो कुछ भी लिखता और बोलता था, मुझे वह सब कुछ प्रतिभापूर्ण लगता था … हे भगवान, लेकिन अब! अब वह रिटायर हो गया है और उसके जीवन का पूरा सार हमारे सामने आ गया है – उसकी मौत के बाद उसका लिखा हुआ एक भी पृष्ठ किसी काम का नहीं रहेगा, वह ज़रा भी मशहूर नहीं, उसकी दो कौड़ी क़ीमत नहीं! वह साबुन का झाग है! और मेरे साथ धोखा हुआ है … देखता हूं … बड़ी बेवक़ूफ़ी का धोखा हुआ है …

(आस्त्रोव फ़्राक-कोट पहने हुए आता है, वह वास्कट और टाई नहीं पहने है तथा नशे में है। उसके पीछे-पीछे गिटार लिये हुए तेलेगिन प्रवेश करता है)

---

* ख़ुशहाल किसान। – अनु०

आस्त्रोव : गिटार बजाओ !

तेलेगिन : सब सो रहे हैं !

आस्त्रोव : बजाओ !

(तेलेगिन धीरे-धीरे गिटार बजाता है)

(**वोय्नीत्स्की से**) तुम यहां अकेले हो ? महिलायें नहीं हैं ? (**कमर पर हाथ रखकर धीरे-धीरे गाता है**) "घर में जाओ, बेशक जाओ और कहीं, घर के मालिक को सोने की जगह नहीं ..." मुझे तूफ़ान ने जगा दिया। क्या ठाठ हैं बारिश के। क्या वक़्त है ?

वोय्नीत्स्की : शैतान जाने।

आस्त्रोव : मुझे तो जैसे येलेना अन्द्रेयेव्ना की आवाज़ सुनाई दी थी।

वोय्नीत्स्की : वह अभी-अभी यहां थी।

आस्त्रोव : ग़ज़ब की औरत है। (**मेज़ पर रखी शीशियों को देखता है**) दवाइयां। कौन-से नुसख़े की दवाई यहां नहीं है ! ख़ार्कोव के डाक्टरों की, मास्को के डाक्टरों की, तूला के डाक्टरों की ... अपने गठिये से उसने सभी शहरों के डाक्टरों के नाक में दम कर रखा है। वह सचमुच बीमार है या ढोंग करता है ?

वोय्नीत्स्की : बीमार है।

• **(ख़ामोशी)**

आस्त्रोव : तुम आज ऐसे उदास-उदास क्यों हो ? प्रोफ़ेसर के लिये दुख हो रहा है क्या ?

वोय्नीत्स्की : मुझे तंग नहीं करो।

आस्त्रोव: या शायद प्रोफ़ेसर की बीवी की मुहब्बत में गिर-फ़्तार हो गये हो?

वोय्नीत्स्की: वह मेरी मित्र है।

आस्त्रोव: मित्र भी बन गयी?

वोय्नीत्स्की: यह "भी" से तुम्हारा क्या मतलब है?

आस्त्रोव: कोई नारी केवल इसी क्रम में किसी पुरुष की मित्र हो सकती है—पहले परिचिता, फिर प्रेमिका और फिर मित्र।

वोय्नीत्स्की: बेहद घटिया फ़लसफ़ा है।

आस्त्रोव: सच?.. हां... यह मानना चाहिये कि मैं घटिया होता जा रहा हूं। देखते हो, मैं नशे में भी धुत्त हूं। आम तौर पर मैं महीने में एक बार ही इतनी ज़्यादा पीता हूं। जब ऐसी हालत में होता हूं तो बेहया और हद दर्जे तक बेशर्म हो जाता हूं। उस वक़्त मैं कुछ भी कर सकता हूं! मैं मुश्किल से मुश्किल ऑपरेशन करने को तैयार हो जाता हूं और उन्हें ख़ूब अच्छे ढंग से करता हूं। तब मैं भविष्य की बहुत बड़ी-बड़ी योजनायें बनाता हूं। उस वक़्त मैं अपने को ख़ब्ती नहीं लगता हूं और इस बात पर यक़ीन करता हूं कि मानवजाति की बहुत बड़ी भलाई कर रहा हूं... बहुत बड़ी भलाई! उस समय मेरा अपना अलग ही फ़लसफ़ा होता है और उस समय, भाइयो आप सभी मुझे कीड़े-मकोड़े... कीटाणु लगते हैं। (**तेलेगिन से**) वेफ़र, गिटार बजाओ।

तेलेगिन: मेरे दोस्त, मैं बड़ी ख़ुशी से तुम्हारे लिये ऐसा करता, लेकिन ख़्याल तो करो—घर में सभी सो रहे हैं।

आस्त्रोव: बजाओ!

(**तेलेगिन धीरे-धीरे गिटार बजाता है**)

पीनी चाहिये। आओ चलें, वहां हमारे कमरे में कुछ ब्रांडी और बच रही है। पौ फटते ही मेरे यहां चलेंगे। सहमत? मेरे यहां एक कम्पाउंडर है, जो कभी "सहमत" नहीं, बल्कि हमेशा "समत" कहता है। बहुत ही शैतान है। तो समत? (**सोन्या को आते देखकर**) माफ़ी चाहता हूं, मैं टाई के बिना हूं। (**जल्दी से जाता है, उसके पीछे-पीछे तेलेगिन भी**)

सोन्या: मामा वान्या, डाक्टर के साथ मिलकर आपने फिर ख़ूब चढ़ा ली। क्या गहरी छनने लगी है दोनों में। डाक्टर तो हमेशा इसी रंग में रहता है, लेकिन आपको यह क्या हो गया है? आपकी इस उम्र में ऐसा करना बिल्कुल शोभा नहीं देता।

वोय्नीत्स्की: उम्र का कोई सवाल नहीं है इस मामले में। जब असली ज़िन्दगी नहीं होती तो सपनों के सहारे जिया जाता है। कुछ न होने से तो यही बेहतर है।

सोन्या: हमारे यहां घास की पूरी तरह से कटाई हो चुकी है, हर दिन बारिशें होती हैं, सब कुछ गल-सड़ रहा है और आप सपनों के फेर में पड़े हुए हैं। आपने खेती-बाड़ी के काम की तरफ़ बिल्कुल ध्यान देना छोड़ दिया है... मैं अकेली काम करती हूं, बिल्कुल थक-टूट गयी हूं... (**घबराकर**) मामा जी, आपकी आंखों में आंसू!

वोय्नीत्स्की: कहां हैं आंसू? कुछ भी तो नहीं... बेकार की बात है... तुमने अभी मेरी तरफ़ बिल्कुल अपनी दिवंगता मां की तरह देखा। मेरी प्यारी बिटिया... (**उसके हाथों और चेहरे को बड़े प्यार से चूमता है**) मेरी बहन... मेरी प्यारी बहन... कहां है वह अब? काश, उसे मालूम होता! ओह, काश, उसे मालूम होता!

सोन्या: क्या? क्या मालूम होता, मामा जी?

वोय्नीत्स्की: मन बहुत भारी है, बहुत दुखी है मन... कुछ

नहीं ... बाद में बात करेंगे ... कुछ नहीं ... मैं जाता हूं ... (**जाता है**)

सोन्या (**दरवाज़ा खटखटाती है**): मिख़ाईल ल्वोविच! आप सो तो नहीं रहे? एक मिनट को बाहर आइये!

आस्त्रोव (**दरवाज़े के पीछे से**): अभी! (**कुछ देर बाद बाहर आता है। वह वास्कट पहने और टाई लगाये हुए है**) क्या बात है?

सोन्या: अगर आपको यह बुरा नहीं लगता तो ख़ुद पीते रहिये, लेकिन आपकी मिन्नत करती हूं कि मामा जी को नहीं पिलाइये। उनके लिये यह हानिकारक है।

आस्त्रोव: अच्छी बात है। हम अब और नहीं पियेंगे।

(**ख़ामोशी**)

मैं अभी अपने घर चला जाऊंगा। बिल्कुल तय हो गया। पत्थर की लकीर मानिये। जब तक बग्घी तैयार होगी, पौ फटने लगेगी।

सोन्या: बारिश हो रही है। सुबह तक रुक जाइये।

आस्त्रोव: तूफ़ान यहां से दूर ही रह रहा है, बस, थोड़ा छुएगा ही। मैं चला जाऊंगा। कृपया मुझे फिर कभी अपने पिता जी के लिये नहीं बुलाइयेगा। मैं उनसे कहता हूं वातरोग और वह कहते हैं गाऊट। मैं उनसे लेटने का अनुरोध करता हूं और वह बैठे रहते हैं। आज तो उन्होंने मुझसे सीधे मुंह बात भी नहीं की।

सोन्या: बहुत सिर चढ़े हुए हैं। (**अलमारी में कुछ ढूंढ़ती है**) कुछ खाना चाहते हैं?

आस्त्रोव: हां, दे दीजिये।

सोन्या: मुझे रातों को कुछ खाना अच्छा लगता है। अलमारी में खाने को शायद कुछ रखा तो है। कहते हैं कि औरतों के

मामले में वह ज़िन्दगी भर बहुत ख़ुशक़िस्मत रहे हैं, उन्होंने उन्हें ऐसे बिगाड़ दिया है। यह पनीर लीजिये।

(दोनों अलमारी के पास खड़े रहकर खाते हैं)

आस्त्रोव : मैंने आज कुछ भी नहीं खाया, सिर्फ़ पीता रहा हूं। आपके पिता का स्वभाव बहुत ख़राब है। (**अलमारी से बोतल निकालता है**) इजाज़त है? (**एक जाम पीता है**) यहां कोई नहीं है और इसलिये खुलकर बात की जा सकती है। मुझे लगता है कि आपके घर में मैं एक महीना भी ज़िन्दा न रह पाता, इस वातावरण में मेरा दम घुट जाता... आपके पिता जो पूरी तरह से अपने वातरोग और किताबों में डूब गये हैं, मामा वान्या हर वक़्त रोते रहते हैं, आपकी यह नानी और फिर सौतेली मां...

सोन्या : सौतेली मां के बारे में क्या कहना चाहते हैं?

आस्त्रोव : इन्सान का सब कुछ बहुत सुन्दर होना चाहिये – शक्ल-सूरत, पोशाक, आत्मा और विचार। वह बहुत सुन्दर है, इसके बारे में दो रायें नहीं हो सकतीं, लेकिन ...वह सिर्फ़ खाती-पीती, सोती, सैर करती और अपने रूप से हमें मुग्ध करती है। इससे ज़्यादा तो कुछ नहीं। उसके सिर पर किसी भी तरह की ज़िम्मेदारियां नहीं, उसके लिये दूसरे लोग अपनी जान खपाते रहते हैं... ऐसा ही है न? और काहिली की ज़िन्दगी अच्छी ज़िन्दगी नहीं हो सकती।

(ख़ामोशी)

कैसे हो सकता है कि मैं बहुत कड़ाई दिखा रहा हूं। आपके मामा वान्या की तरह मैं भी ज़िन्दगी से सन्तुष्ट नहीं हूं और

हम दोनों दूसरों के लिये ऊब पैदा करनेवाले बनते जा रहे हैं।

सोन्या: आप ज़िन्दगी से नाखुश हैं?

आस्त्रोव: मैं यों तो जीवन को प्यार करता हूं, लेकिन हमारी प्रान्तीय, रूसी, कूपमंडूकी ज़िन्दगी को बर्दाश्त नहीं कर सकता, जी-जान से इससे नफ़रत करता हूं। जहां तक मेरी निजी, व्यक्तिगत ज़िन्दगी का सवाल है तो क़सम भगवान की, उसमें कुछ भी तो अच्छा नहीं। बात यह है कि जब हम अन्धेरी रात में जंगल को लांघ रहे होते हैं और अगर उस वक़्त कहीं दूरी पर रोशनी दिखाई देती है तो हमें न तो थकान महसूस होती है, न अन्धेरा अखरता है, न वे कंटीली शाखायें ही बुरी लगती हैं जो हमारे चेहरे पर चुभती हैं... आप तो जानती ही हैं कि अपने इलाक़े में मैं जितना काम करता हूं, उतना कोई नहीं करता, मुझे लगातार क़िस्मत के थपेड़े खाने पड़ते हैं और कभी-कभी मुझे इतनी मुसीबत सहनी पड़ती है कि कुछ नहीं कहिये, लेकिन मेरे सामने कहीं कोई रोशनी नहीं। मैं अपने लिये किसी भी चीज़ की राह नहीं देख रहा हूं, लोगों को प्यार नहीं करता हूं... एक ज़माने से किसी को प्यार नहीं करता हूं।

सोन्या: किसी को भी नहीं?

आस्त्रोव: किसी को भी नहीं। पुरानी याद अभी भी बनी हुई है, इसलिये आपकी आया के प्रति थोड़ा स्नेह अनुभव करता हूं। किसान तो सबके सब एक ही ढांचे में ढले और पिछड़े हुए हैं, गन्दी ज़िन्दगी बिताते हैं और बुद्धिजीवियों के साथ मेरी आसानी से पटरी नहीं बैठती। उनसे जी घबराने लगता है। ये सभी, हमारे ये भले परिचित विचारों की बहुत ही नीची उड़ान भरते हैं, इनकी भावनाओं में भी कोई ऊंचाई नहीं है और अपने बहुत छोटे-से घेरे से बाहर निकलने में असमर्थ हैं यानी खासे मूर्ख हैं। और जो अधिक समझदार हैं, छुटभैये नहीं हैं,

बहुत जल्दी आपे से बाहर हो जाते हैं, सभी तरह की खोद-बीन करते रहते हैं और मानसिक कुण्ठाओं के शिकार हैं... ये हर वक़्त शिकवा-शिकायत करते हैं, नफ़रत की आग में जलते हैं, दूसरों पर ख़ूब कीचड़ उछालते हैं, आदमी को ग़लत नज़रिये से देखते हैं, उस पर एतबार-भरोसा नहीं करते और यह फ़तवा दे देते हैं: "ओह, वह तो सिरफिरा है!" या: "बड़ा बातूनी है!" और जब उनकी समझ में यह नहीं आता कि मेरे माथे पर कौन-सा लेबल लगायें तो कहते हैं: "यह अजीब आदमी है, बड़ा अजीब आदमी!" मैं जंगलों को प्यार करता हूं—यह अजीब बात है—मैं मांस नहीं खाता—यह भी अजीब बात है। प्रकृति और लोगों के प्रति सहज, निष्छल-निष्कपट, और स्वतन्त्र रवैया नहीं रहा... नहीं रहा, नहीं रहा!
(पीना चाहता है)

सोन्या (उसे रोकती है): और नहीं पीजियेगा, आपसे अनुरोध, आपकी मिन्नत करती हूं।

आस्त्रोव: भला क्यों?

सोन्या: यह आपको बिल्कुल शोभा नहीं देता! आप इतने आकर्षक हैं, आपकी आवाज़ इतनी प्यारी है... इतना ही नहीं, जितने लोगों को मैं जानती हूं, आप उनमें अद्भुत हैं। आप क्यों उन साधारण लोगों जैसे होना चाहते हैं जो पीते और जुआ खेलते हैं? ओह, ऐसा नहीं कीजिये, मैं आपकी मिन्नत करती हूं! आप हमेशा यह कहते हैं कि लोग निर्माण नहीं करते, बल्कि जो कुछ भगवान ने हमें दिया है, उसे मिटाते हैं। आप अपने को क्यों मिटा रहे हैं? ऐसा नहीं कीजिये, नहीं कीजिये, आपकी मिन्नत करती हूं, आप से विनती करती हूं।

आस्त्रोव (उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाता है): अब फिर कभी नहीं पिऊंगा।

सोन्या : वचन दीजिये।

आस्त्रोव : क़सम खाता हूं।

सोन्या (ज़ोर से उसका हाथ दबाती है) : धन्यवाद !

आस्त्रोव : बस, काफ़ी है ! मेरा तो नशा भी उतर गया। देखती हैं, मैं बिल्कुल नशे में नहीं रहा और अब ज़िन्दगी के आख़िरी दिन तक ऐसा ही रहूंगा। **(घड़ी पर नज़र डालता है)** तो हम बातचीत जारी रखेंगे। मैं कह रहा था – मेरा ज़माना बीत चुका, देर हो चुकी मुझे ... मैं बुढ़ा गया, काम की चक्की में पिस गया, कमीना हो गया हूं, मेरी सभी भावनायें मर चुकी हैं और लगता है कि अब किसी का भी नहीं हो सकता। मैं किसी को प्यार नहीं करता और ... अब कर भी नहीं सकूंगा। हां, सुन्दरता ज़रूर मुझे अपनी तरफ़ खींचती है। सुन्दरता के प्रति मैं उदासीन नहीं रह सकता। मुझे लगता है कि अगर येलेना अन्द्रेयेव्ना चाहती, तो एक दिन में मेरे होश-हवास गुम कर देती ... लेकिन यह तो प्यार नहीं, लगाव नहीं ... **(हाथ से आंख मूंदकर कांप उठता है)**

सोन्या : क्या बात है ?

आस्त्रोव : कुछ नहीं ... ईस्टर के कुछ पहले मेरा एक मरीज़ क्लोरोफ़ार्म की बेहोशी में ही मर गया।

सोन्या : इसके बारे में भूल जाना चाहिये।

(ख़ामोशी)

मिख़ाईल ल्वोविच, यह बताइये, अगर मेरी कोई सहेली या छोटी बहन होती और आपको यह पता चल जाता कि वह ... मान लीजिये ... आपको प्यार करती है, तो आपने क्या किया होता ?

आस्त्रोव (कंधे झटकता है) : कह नहीं सकता। कुछ भी न किया होता। मैंने किसी तरह उसके दिमाग़ में यह बात डाल दी होती कि उसे प्यार नहीं कर सकता... मेरा दिमाग़ दूसरी ही बातों में उलझा हुआ है। अरे हां, अगर मुझे जाना ही है तो जाना चाहिये। तो नमस्ते, वरना हमारी बातचीत तो सुबह तक भी ख़त्म नहीं होगी। **(हाथ मिलाता है)** अगर आप इजाज़त दें तो मैं बैठक में से चला जाऊं। डरता हूं कि आपके मामा कहीं मुझे न रोक लें। **(जाता है)**

सोन्या (स्वगत) : उसने मुझसे कुछ भी तो नहीं कहा... उसका मन, उसकी आत्मा अभी तक मुझसे छिपी हुई है, लेकिन मैं अपने को इतनी ख़ुश क्यों महसूस कर रही हूं? **(ख़ुशी से हंसती है)** मैंने उससे कहा : आप इतने आकर्षक हैं, आपकी आवाज़ इतनी प्यारी है... क्या मैंने अटपटी बात की है? उसकी आवाज़ कांप रही थी, मेरे मन को सहला रही थी... मैं उसे हवा में अनुभव कर रही हूं। और जब मैंने उससे छोटी बहन के बारे में कहा तो वह समझा नहीं... **(हाथों को दबाते हुए)** ओह, यह कितनी भयानक बात है कि मैं बदसूरत हूं। कैसी भयानक बात है! और मैं जानती हूं कि मैं बदसूरत हूं, जानती हूं, जानती हूं... पिछले इतवार को गिरजे से बाहर निकलते हुए मैंने लोगों को अपने बारे में बातें करते सुना और एक औरत ने कहा : "वह उदार है, दयालु है, लेकिन अफ़सोस की बात है कि ऐसी बदसूरत है..." बदसूरत...

(येलेना अन्द्रेयेव्ना आती है)

येलेना अन्द्रेयेव्ना (खिड़की खोलती है) : तूफ़ान ख़त्म हो गया।

कितनी प्यारी हवा है अब !

(ख़ामोशी)

डाक्टर कहां है ?

सोन्या : चला गया।

(ख़ामोशी)

येलेना अन्द्रेयेव्ना : सोन्या !

सोन्या : क्या बात है ?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : तुम कब तक मुझसे ऐसे मुंह फुलाये रहोगी ? हमने एक-दूसरी के साथ कोई बुराई नहीं की। तो किसलिये हम दुश्मन बनी रहें ? बस , काफ़ी है ....

सोन्या : मैं ख़ुद यही चाहती थी ...(**उसका आलिंगन करती है**) हम अब नाराज़ नहीं रहेंगी।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : बहुत अच्छी बात है।

(दोनों भाव-विह्वल हैं)

सोन्या : पापा बिस्तर पर चले गये ?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : नहीं , दीवानख़ाने में बैठे हैं ... हम एक-दूसरी से हफ़्तों बोलती-चालती नहीं और भगवान ही जानता है कि किस कारण ... (**खाने-पीने की अलमारी खुली देखकर**) यह क्या है ?

सोन्या : मिख़ाईल ल्वोविच ने कुछ खाया है।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : और यहां शराब भी है ... आइये , हम एक-दूसरी को 'तुम' कहकर सम्बोधित करने के लिए पियें।

सोन्या : आइये।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : एक ही जाम से ... (**जाम भरती है**) ऐसे ज़्यादा अच्छा रहेगा। तो अब हम एक-दूसरी को 'तुम' कहा करेंगी?

सोन्या : हां।

(**दोनों पीती और एक-दूसरी को चूमती हैं**)

मैं तो बहुत समय से सुलह करना चाहती थी, लेकिन यों ही झेंप महसूस करती रही ... (**रोती है**)

येलेना अन्द्रेयेव्ना : तुम रो क्यों रही हो?

सोन्या : कोई ख़ास बात नहीं, ऐसे ही।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : बस, काफ़ी है, काफ़ी है ... (**रोती है**) मैं भी अजीब हूं, ख़ुद रोने लगी हूं ...

(**ख़ामोशी**)

तुम मुझसे इसलिये नाराज़ हो कि मैंने पैसे के फेर में पड़कर तुम्हारे पापा से शादी की है ... अगर तुम क़समों पर यक़ीन करती हो तो क़सम खाकर कहती हूं कि मैंने प्यार की वजह से ही ऐसा किया है। मैं विद्वान और प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में तुम्हारे पापा को चाहने लगी थी। प्यार असली नहीं, नक़ली था, लेकिन उस वक़्त वह मुझे असली लगा था। इसमें मेरा दोष नहीं है। और तुम हमारी शादी के दिन से ही मुझे अपनी समझदार तथा सन्देहपूर्ण आंखों से दण्ड दे रही हो।

सोन्या : बस, अब सुलह, सुलह हो गयी! हम पिछली बातों को भूल जायेंगी।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : इस तरह शक की नज़रों से नहीं देखना

चाहिये – तुम्हें यह जंचता नहीं। सब पर भरोसा करना चाहिये वरना जीना मुमकिन नहीं।

(ख़ामोशी)

सोन्या : सहेली के रूप में, मुझे ईमानदारी से यह बताओ... तुम सुखी हो ?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : नहीं।

सोन्या : मैं यह जानती थी। एक और सवाल। मुझे साफ़-साफ़ बताओ – तुम यह चाहती हो कि तुम्हारा जवान पति होता ?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : तुम अभी कैसी भोली लड़की हो ! ज़ाहिर है कि चाहती हूं। (**हंसती है**) तो पूछो, कुछ और पूछो...

सोन्या : तुम्हें डाक्टर अच्छा लगता है ?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : हां, बहुत।

सोन्या (**हंसती है**) : मेरा चेहरा बुद्धुओं जैसा है... है न ? वह चला गया, लेकिन मैं उसकी आवाज़ और पैरों की आहट सुन रही हूं और अंधेरी खिड़की पर नज़र डालती हूं तो वहां मुझे उसके चेहरे का आभास होता है। मुझे अपनी बात कह लेने दो... लेकिन मैं इतना ऊंचा नहीं बोल सकती, मुझे शर्म आती है। आओ मेरे कमरे में चलें, वहां बातें करेंगी। मैं तुम्हें बुद्धू लगती हूं न ? मान लो... मुझसे उसके बारे में कुछ कहो...

येलेना अन्द्रेयेव्ना : क्या कहूं ?

सोन्या : वह बहुत समझदार है... वह सब कुछ जानता है, सब कुछ कर सकता है... वह इलाज करता है और जंगल उगाता है...

येलेना अन्द्रेयेव्ना : बात जंगल उगाने और इलाज करने की

नहीं है ... मेरी प्यारी, तुम इस बात को समझो, यह तो प्रतिभा है! और तुम जानती हो कि प्रतिभा का क्या अर्थ होता है? इसका अर्थ होता है साहस, मुक्त मस्तिष्क, खुले और व्यापक विचार ... पेड़ रोपना और यह कल्पना करना कि एक हज़ार साल बाद इसका क्या फल मिलेगा, उस आदमी को अभी से मानवजाति के भावी सुख-सौभाग्य की झलक मिलती है। इस तरह के लोग इने-गिने ही होते हैं, उन्हें प्यार करना चाहिये ... वह पीता है, कभी-क़भी गुस्ताख़ी से पेश आता है – लेकिन यह कौन-सी मुसीबत है? रूस में प्रतिभावान व्यक्ति दूध का धुला हुआ नहीं हो सकता। ख़ुद ही सोचो, क्या ज़िन्दगी है इस डाक्टर की! रास्तों पर इतनी गन्दगी कि गुज़रा न जाये, कड़ाके का पाला, बर्फ़ के तूफ़ान, बहुत बड़े-बड़े फ़ासले, गुस्ताख़, जंगली लोग, चारों तरफ़ ग़रीबी और बीमारी। ऐसे वातावरण में जो आदमी काम और हर दिन संघर्ष करता है, उसके लिये चालीस साल का होते न होते अपने को बेदाग़ और बोतल से दूर रखना मुश्किल है ... (**सोन्या को चूमती है**) मैं सच्चे दिल से तुम्हारे सुख की कामना करती हूं, तुम इसके लायक़ हो ... (**उठती है**) और मैं उबानेवाली, गौण पात्र हूं ... संगीत के क्षेत्र में, पति के घर में, सभी रोमांसों में – यानी थोड़े में, हर जगह गौण पात्र रही हूं। सच कहूं, सोन्या, अगर सोचा जाये तो मैं बहुत, बहुत ही बदक़िस्मत हूं! (**विह्वल होकर मंच पर इधर-उधर आती-जाती है**) मेरे लिये इस दुनिया में ख़ुशी नहीं है। नहीं है! तुम हंस क्यों रही हो?

सोन्या (**मुंह ढांपकर हंसती है**): मैं इतनी ख़ुश हूं ... इतनी ख़ुश हूं!

येलेना अन्द्रेयेव्ना: मेरा पियानो बजाने को मन हो रहा है ... मैंने तो अब कोई रचना बजायी होती।

सोन्या: बजाओ। (**उसे गले लगाती है**) मैं सो नहीं सकती ... कुछ बजाओ!

येलेना अन्द्रेयेव्ना:अभी। तुम्हारे पापा सो नहीं रहे। वह जब बीमार होते हैं तो संगीत से उन्हें झल्लाहट होती है। तुम जाकर पूछ आओ। अगर उन्हें बुरा नहीं लगेगा तो मैं कुछ बजाऊंगी। जाओ।

सोन्या: अभी। (**जाती है**)

(**बाग़ में चौकीदार डंडे से आवाज़ करता है**)

येलेना अन्द्रेयेव्ना: बहुत अरसे से मैंने पियानो नहीं बजाया। पियानो बजाऊंगी और आंसू बहाऊंगी, बेवक़ूफ़ की तरह आंसू बहाऊंगी। (**खिड़की की तरफ़ देखते हुए**) येफ़ीम, यह तुम डंडे से ठक-ठक कर रहे हो?

(**चौकीदार की आवाज़: "जी, मैं!"**)

येलेना अन्द्रेयेव्ना: ठक-ठक नहीं करो, साहब की तबीयत अच्छी नहीं।

(**चौकीदार की आवाज़: "अभी चला जाता हूं!" धीरे से सीटी बजाता है। "अरे ओ कुत्ते, छोकरे! कुत्ते!"**)

(**ख़ामोशी**)

सोन्या (**लौटकर**): पापा ने मना किया है!

(**परदा गिरता है**)

तीसरा अंक

(सेरेबर्याकोव के घर का दीवानख़ाना। उसमें तीन दरवाज़े हैं – दायें, बायें और बीच में)

(दिन का वक़्त)

(वोय्नीत्स्की और सोन्या बैठे हैं तथा येलेना अन्द्रेयेव्ना कुछ सोचती हुई मंच पर आ-जा रही है)

वोय्नीत्स्की : जनाब प्रोफ़ेसर साहब ने यह इच्छा प्रकट करने की कृपा की है कि हम सब आज दिन के एक बजे इस दीवानख़ाने में जमा हो जायें। **(घड़ी पर नज़र डालता है)** पौन बजा है। हम लोगों से कुछ फ़रमाना चाहते हैं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : शायद कोई काम होगा।

वोय्नीत्स्की : कोई काम-वाम नहीं है उसे। वह बकवास लिखता रहता है, बड़बड़ाता है, ईर्ष्या की आग में जलता है और इससे अधिक कुछ नहीं।

सोन्या (भर्त्सना के अन्दाज़ में) : मामा जी !

वोय्नीत्स्की : समझा, समझा, माफ़ी चाहता हूं। **(येलेना अन्द्रेयेव्ना की तरफ़ इशारा करते हुए)** ज़रा देखिये तो – आप चल रही हैं और काहिली से लड़खड़ा रही हैं। क्या अदा है ! बहुत ख़ूब।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : आप सारा दिन बड़बड़ाते हैं, लगातार बड़बड़ाया करते हैं – मन नहीं ऊबता आपका ! **(दुखी होकर)** मैं ऊब से मरी जा रही हूं, नहीं जानती कि क्या करूं।

सोन्या (कंधे झटककर) : कामों की भी क्या कोई कमी है ? सिर्फ़ तुम्हारा करने को मन होना चाहिये।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: मिसाल के तौर पर?

सोन्या: खेती-बाड़ी के काम में दिलचस्पी लो, पढ़ाओ, इलाज करो। कुछ भी तो कर सकती हो। जब तुम और पापा यहां नहीं थे तो मामा वान्या के साथ हम खुद बाज़ार में जाकर आटा बेचते थे।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: मैं यह नहीं कर सकती। फिर यह तो दिलचस्प काम भी नहीं। यह तो ऊंचे सिद्धान्तोंवाले उपन्यासों में ही किसानों को पढ़ाया और उनका इलाज किया जाता है। भला मैं कैसे अचानक ही जाकर उनका इलाज करने या उन्हें पढ़ाने लगूं?

सोन्या: और मैं तुम्हारी इस बात को कि कैसे अचानक जाकर उन्हें पढ़ाने लगूं, बिल्कुल नहीं समझ पा रही हूं। कुछ अरसे बाद तुम्हें इसकी आदत हो जायेगी। (**उसका आलिंगन करती है**) ऊबो नहीं, मेरी प्यारी। (**हंसते हुए**) तुम ऊब महसूस करती हो, ऊब के मारे तुम्हारा बुरा हाल होता है और ऊब तथा काहिली छूत की बीमारी की तरह दूसरों को भी लग जाती हैं। देखो तो – मामा वान्या कुछ भी तो नहीं करते और हर वक़्त छाया बने तुम्हारे पीछे-पीछे घूमते रहते हैं। मैं भी अपने काम-काज छोड़कर तुमसे बातें करने के लिये तुम्हारे पास भाग आयी हूं। ऐसी काहिल हो गयी हूं कि कुछ न पूछो! डाक्टर मिख़ाईल ल्वोविच पहले बहुत कम ही हमारे यहां आता था, महीने में एक बार से अधिक नहीं। उसे यहां आने को राज़ी करना मुश्किल था और अब वह हर दिन यहां आ जाता है, अपने जंगलों और डाक्टरी की भी उसे सुध-बुध नहीं रही। तुम तो ज़रूर जादूगरनी हो।

वोयनीत्स्की: ऐसे छटपटाती क्यों रहती हैं? (**उत्साह से**) तो मेरी प्यारी, साकार सुन्दरता, समझदारी दिखाइये! आपकी

नसों में जलपरी का ख़ून बहता है, आप जलपरी बनकर दिखाइये! ज़िन्दगी में एक बार तो अपने मन की कीजिये, जल्दी से किसी जल-देवता की प्रेम-दीवानी हो जाइये और गहरे पानी में ऐसे गोता लगा जाइये कि जनाब प्रोफ़ेसर साहब और हम सब हाथ मलते ही रह जायें!

येलेना अन्द्रेयेव्ना (**गुस्से से**): मुझे परेशान नहीं कीजिये! कैसी कठोरता है यह! (**जाना चाहती है**)

वोय्नीत्स्की (**उसे जाने नहीं देता**): बस, बस, मेरी ज़िन्दगी की ख़ुशी, माफ़ कीजिये... क्षमा चाहता हूं। (**हाथ चूमता है**) सुलह।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: आपको मानना होगा कि फ़रिश्ते के सब्र का प्याला भी छलक जाता।

वोय्नीत्स्की: सुलह और मेल-मिलाप के चिह्न के रूप में अभी गुलाबों का एक गुलदस्ता लेकर आता हूं जिसे मैंने सुबह ही आपके लिये तैयार किया था... पतझर के गुलाब – बहुत सुन्दर, उदास-से गुलाब... (**जाता है**)

सोन्या: पतझर के गुलाब – बहुत सुन्दर, उदास-से गुलाब...

(**दोनों खिड़की से देखती हैं**)

येलेना अन्द्रेयेव्ना: सितम्बर तो आ भी गया।

(**ख़ामोशी**)

डाक्टर कहां है?

सोन्या: मामा वान्या के कमरे में। कुछ लिख रहा है। मैं ख़ुश हूं कि मामा वान्या यहां से चले गये, मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : किस बारे में ?

सोन्या : किस बारे में ? (**उसकी छाती पर सिर रखती है**)

येलेना अन्द्रेयेव्ना : बस, बस ... (**उसके बालों को सहलाती है**) बस, काफ़ी है।

सोन्या : मैं बदसूरत हूं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : तुम्हारे बाल बहुत सुन्दर हैं।

सोन्या : नहीं ! (**दर्पण में अपने को देखने के लिये पीछे की तरफ़ नज़र घुमाती है**) नहीं ! जब औरत कुरूप होती है तो लोग उससे कहते हैं : "आपकी आंखें बहुत प्यारी हैं, आपके बाल बहुत सुन्दर हैं" ... मैं उसे छः साल से प्यार करती हूं, अपनी मां से भी ज़्यादा प्यार करती हूं ! मैं हर वक़्त उसकी आवाज़ सुनती रहती हूं, उसका हाथ मिलाना अनुभव करती रहती हूं, दरवाज़े की तरफ़ देखती और प्रतीक्षा करती हूं। मुझे हर वक़्त यही लगता है कि वह अभी भीतर आ जायेगा। और देखो, मैं उसके बारे में बात करने के लिये तुम्हारे पास आती रहती हूं। अब वह हर दिन यहां आता है, लेकिन मेरी तरफ़ नज़र उठाकर नहीं देखता, मेरी ओर ध्यान नहीं देता ... बहुत बड़ी यातना है यह ! मुझे कोई आशा नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं ! (**हताशा से**) हे भगवान, मुझे शक्ति दो ... मैं रात भर प्रार्थना करती रही ... मैं अक्सर उसके पास जाती हूं, ख़ुद उससे बातचीत करती हूं, उसकी आंखों में झांकती हूं ... मुझमें आत्म-सम्मान नहीं रहा, अपने को वश में रखने की शक्ति नहीं रही ... अपने दिल को क़ाबू में नहीं रख सकी और मामा वान्या के सामने यह मान लिया कि उसे प्यार करती हूं ... सब नौकर-चाकर यह जानते हैं कि मैं उसे प्यार करती हूं। सभी जानते हैं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : और वह ?

सोन्या : नहीं। वह मेरी तरफ़ ध्यान ही नहीं देता।

येलेना अन्द्रेयेव्ना (सोचते हुए) : अजीब आदमी है... एक बात कहूं? तुम कहो तो मैं उससे बात करूं... मैं बड़ी सावधानी से... इशारे से ऐसा करूंगी...

(ख़ामोशी)

सच, कब तक ऐसे अंधेरे में भटका जा सकता है... तुम मुझे ऐसा करने दो!

(सोन्या सिर झुकाकर हामी भरती है)

तो तय हो गया! प्यार करता है या नहीं करता – यह जानना मुश्किल नहीं। तुम घबराओ नहीं, मेरी प्यारी, चिन्ता नहीं करो – मैं बड़ी होशियारी से यह पूछूंगी, उसे पता भी नहीं चलेगा। हमें तो सिर्फ़ यही मालूम करना है – हां या नहीं?

(ख़ामोशी)

अगर नहीं, तो बेशक वह यहां न आया करे। ठीक है न?

(सोन्या सिर झुकाकर हामी भरती है)

जब आदमी सामने नहीं होता, तो उसके मन पर इतनी भारी भी नहीं गुज़रती। हम मामले को लटकायेंगी नहीं, अभी सारी बात साफ़ कर लेंगी। वह मुझे कुछ ख़ाके दिखाना चाहता था। जाकर कह दो कि मैंने उसे बुलाया है।

सोन्या (बहुत विह्वल होते हुए) : तुम मुझे सब कुछ सच-सच बता दोगी न?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : हां, बेशक। मुझे लगता है कि सचाई

कैसी भी क्यों न हो, अंधेरे में रहने से तो वह कहीं कम भयानक होती है। तुम मुझ पर भरोसा करो, मेरी प्यारी।

सोन्या: हां, हां ... मैं उससे कहूंगी कि तुम उसके खाके देखना चाहती हो ... (**जाती है और दरवाज़े के पास पहुंचकर रुक जाती है**) नहीं, अन्धेरे में रहना ही बेहतर है ... मन में उम्मीद तो बनी रहती है ...

येलेना अन्द्रेयेव्ना: क्या बात है?

सोन्या: कुछ नहीं। (**जाती है**)

येलेना अन्द्रेयेव्ना (**स्वगत**): इससे बुरा और कुछ नहीं हो सकता कि आदमी को किसी का रहस्य मालूम हो और वह उसकी मदद करने में असमर्थ हो। (**सोचते हुए**) वह इसे प्यार नहीं करता, यह तो स्पष्ट है, किन्तु इससे शादी करने में उसके लिये क्या बुराई है? सोन्या सुन्दर नहीं है, किन्तु गांव के डाक्टर के लिये, और सो भी उसकी इस उम्र में, वह बहुत अच्छी पत्नी सिद्ध होगी। वह समझदार, इतनी दयालु, निष्कपट-निश्छल है ... नहीं, बात यह नहीं, यह नहीं ...

(**ख़ामोशी**)

मैं अच्छी तरह से समझती हूं इस बेचारी लड़की को। भयानक ऊब के इस वातावरण में जब लोगों के बजाय सभी ओर फूहड़पन के मटमैले धब्बे ही घूमते दिखाई देते हैं, केवल घटिया और कमीनी बातें ही सुनाई देती हैं, जब खाने-पीने और सोने के अलावा लोग कुछ नहीं करते, तो जब दूसरों से भिन्न, सुन्दर, दिलचस्प और आकर्षक, अन्धेरे में चांद की तरह चमक उठनेवाला वह कभी-कभी यहां आता है ... ऐसे व्यक्ति के जादू में बंध जाना, अपनी सुध-बुध खो बैठना ... लगता है कि मैं ख़ुद भी

कुछ-कुछ उसकी ओर खिंच गयी हूं। हां, उसके बिना मुझे भी ऊब महसूस होती है, जब उसके बारे में सोचती हूं तो मुस्करा उठती हूं... यह मामा वान्या कहता है कि मेरी नसों में जलपरी का ख़ून बहता है। "जीवन में एक बार तो अपने मन की कीजिये"... शायद ठीक ही है? शायद ऐसा ही करना चाहिये... आज़ाद पंछी की तरह तुम सबसे, तुम्हारी उदास सूरतों और बातों से कहीं दूर उड़ जाऊं, यह भूल जाऊं कि तुम सब इस दुनिया में हो भी... लेकिन मैं कायर हूं, संकोची-शर्मीली हूं... मेरी आत्मा मुझे बुरी तरह व्यथित कर डालेगी... वह हर दिन यहां आता है, मैं भांप सकती हूं कि किसलिये वह यहां आता है, अपने को दोषी भी अनुभव करती हूं, सोन्या के पांव पड़ने, उससे माफ़ी मांगने, उसके सामने रोने को भी तैयार हूं...

आस्त्रोव (नक़्शा लिये हुए आता है): नमस्कार! (**हाथ मिलाता है**) आप मेरी चित्रकारी देखना चाहती हैं?

येलेना अन्द्रेयेव्ना: कल आपने मुझे अपने नक़्शे दिखाने का वचन दिया था... आपके पास फ़ुरसत है?

आस्त्रोव: ओह, बेशक है। (**ताश खेलने की मेज़ पर नक़्शा बिछाता है और उसे पिन लगाकर चिपकाता है**) आपका जन्म कहां हुआ था?

येलेना अन्द्रेयेव्ना (उसकी मदद करते हुए): पीटर्सबर्ग में।

आस्त्रोव: शिक्षा कहां पायी?

येलेना अन्द्रेयेव्ना: संगीत-महाविद्यालय में।

आस्त्रोव: आपके लिये तो सम्भवतः यह दिलचस्प नहीं होगा।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: वह क्यों? यह सच है कि मैं गांव के जीवन से परिचित नहीं हूं, लेकिन मैंने उसके बारे में पढ़ा तो बहुत है।

आस्त्रोव: इस घर में मेरी अपनी एक मेज़ है। इवान पेत्रोविच के कमरे में। जब मैं थककर चूर हो जाता हूं, दिमाग़ एकदम ठस हो जाता है तो सब कुछ छोड़-छाड़कर यहां भाग आता हूं और घण्टा-दो घण्टे इस नक़्शे से अपना दिल बहलाता हूं... इवान पेत्रोविच और सोफ़्या अलेक्सान्द्रोव्ना गिनतारे की गीटियां बजाते रहते हैं और मैं इनके पास अपनी मेज़ पर बैठा हुआ लकीरें खींचता तथा रंग भरता रहता हूं, मेरे दिल को गर्माहट और चैन मिलता है, झींगुर झीं-झीं का राग अलापता रहता है। लेकिन मैं अक्सर नहीं, महीने में एक बार ही यह ख़ुशी हासिल कर पाता हूं... (**नक़्शे पर दिखाते हुए**) तो अब इधर देखिये। पचास साल पहले हमारा इलाक़ा कैसा था, यह उसकी तस्वीर है। गहरा और हल्का हरा रंग जंगलों को ज़ाहिर करता है–पूरे इलाक़े के आधे भाग में जंगल थे। जहां हरियाली पर लाल जाली-सी बनी हुई है, वहां बड़े हिरन और बकरियां पाली जाती थीं... मैंने यहां वनस्पति और जीव-जन्तु भी दिखाये हैं। इस झील में हंस, कलहंस, बत्तखें और जैसे कि बुज़ुर्ग कहा करते हैं–सभी तरह के पक्षी-परिन्दे थे, बहुत ही ज़्यादा, पूरे दल-बादल। गांवों और पुरवों के अलावा, देखती हैं न, जहां-तहां छोटी-मोटी बस्तियां, खेत-घर, साधु-संन्यासियों की कुटियायें और पनचक्कियां भी थीं... ढोर-डंगर और घोड़े बहुत बड़ी संख्या में थे। आसमानी रंग से यह सब दिखाया गया है। मिसाल के तौर पर इस क्षेत्र में आसमानी रंग बहुत गाढ़ा भरा गया है–यहां घोड़ों के बड़े-बड़े झुण्ड थे, हर किसान के पास तीन घोड़े थे।

(**ख़ामोशी**)

आइये, अब नीचे देखें। पच्चीस साल पहले जो हालत थी, वह यहां दिखायी गयी है। कुल इलाक़े के सिर्फ़ एक-तिहाई भाग में ही जंगल रह गये थे। बकरियां नहीं रहीं, लेकिन हिरन हैं। हरा और आसमानी रंग फीके पड़ गये हैं, आदि, आदि। अब हम तीसरे भाग पर नज़र डालते हैं यानी इस वक़्त हमारे इलाक़े की जो हालत है, उसे देखते हैं। हरा रंग कहीं-कहीं है, वह भी गाढ़ा नहीं, बल्कि छोटे-छोटे धब्बों के रूप में। हिरन, हंस और तीतर ग़ायब हो गये। पहले की छोटी-मोटी बस्तियों, खेत-घरों, कुटियाओं, पनचक्कियों का तो नाम-निशान ही बाक़ी नहीं रहा। कुल मिलाकर यह कि क्रमिक और निश्चित नाश का चित्र हमारे सामने आता है जिसे बिल्कुल पूरा होने में शायद दस-पन्द्रह साल और लगेंगे। आप कहेंगी कि यहां संस्कृति के प्रभाव ने अपना रंग दिखाया है, कि स्वाभावतः नये जीवन को पुराने जीवन की जगह लेनी चाहिये। हां, मैं इस बात को समझता हूं। अगर बरबाद किये गये इन जंगलों के स्थान पर सड़कें बन जातीं, रेलों की पटरियां बिछ जातीं, अगर यहां कारख़ाने, फ़ैक्टरियां और स्कूल बन जाते – लोग पहले से अधिक स्वस्थ, समृद्ध और समझदार हो जाते, तो भी कोई बात होती। लेकिन यहां तो ऐसा कुछ नहीं! हमारे इस इलाक़े में वही दलदलें और मच्छर हैं, सड़कें नहीं हैं, ग़रीबी, टाइफ़स, डिप-थीरिया और आग लगने की घटनाओं का बोल-बाला है... यहां मानव के अस्तित्व के कठिन संघर्ष के परिणामस्वरूप होनेवाली बरबादी से हमारा वास्ता है। यह आलस, अज्ञानता, आत्म-चेतना के पूर्ण अभाव के कारण होनेवाली बरबादी है, जबकि ठिठुरा, भूखा, बीमार आदमी अपनी रही-सही ज़िन्दगी को बचाने, अपने बच्चों की रक्षा करने के लिये अनजाने, सहज भाव से उस सबको झपट लेता है जिससे उसकी भूख मिट सकती

हो, तन गर्माया जा सकता हो और वह आनेवाले कल की फ़िक्र किये बिना सब कुछ नष्ट कर डालता है... लगभग सभी कुछ नष्ट किया जा चुका है और उसकी जगह अभी तक बनाया कुछ भी नहीं गया। (**रुखाई से**) मैं आपके चेहरे से देख रहा हूं कि आपको यह सब दिलचस्प नहीं लग रहा।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : बात यह है कि मैं इन चीज़ों को बहुत कम समझती हूं...

आस्त्रोव : समझने को कुछ है भी नहीं, बस आपके लिये यह सब दिलचस्प नहीं है।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : सच कहूं तो मेरे विचार किसी और बात में उलझे हुए हैं। मैं क्षमा चाहती हूं। मुझे आपसे कुछ पूछना है। मैं घबरा रही हूं और यह नहीं जानती कि इसे कैसे शुरू करूं।

आस्त्रोव : पूछना है ?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : हां, पूछना है, लेकिन... मामला बड़ा सीधा-सादा है। आइये, बैठ जायें।

(**दोनों बैठते हैं**)

इस मामले का एक युवती से सम्बन्ध है। हम ईमानदार लोगों की तरह, मित्रों की भांति और किसी तरह की लाग-लपेट के बिना बात करेंगे। बात करेंगे और भूल जायेंगे कि हमने क्या चर्चा की थी। ठीक है ?

आस्त्रोव : ठीक है।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : इस मामले का सम्बन्ध है मेरी सौतेली बेटी सोन्या से। वह आपको अच्छी लगती है ?

आस्त्रोव : हां, मैं उसकी इज़्ज़त करता हूं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: नारी के रूप में वह आपको पसन्द है?

आस्त्रोव (ज़रा रुककर): नहीं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: दो-तीन शब्द और – इनके बाद क़िस्सा ख़त्म। आपकी नज़र में कुछ आया?

आस्त्रोव: कुछ भी नहीं।

येलेना अन्द्रेयेव्ना (उसका हाथ अपने हाथ में ले लेती है): आप उसे नहीं चाहते हैं, यह मैं आपकी आंखों से देख रही हूं... वह यातना सहती है... आप इस बात को समझिये और ... यहां आना बन्द कर दीजिये।

आस्त्रोव (उठकर खड़ा हो जाता है): मेरा ज़माना लद चुका है... और फिर फ़ुरसत भी नहीं है... **(कंधे झटककर)** फ़ुरसत ही कहां है? **(वह परेशानी महसूस करता है)**

येलेना अन्द्रेयेव्ना: छिः, कैसी अप्रिय बातचीत है। मैं ऐसे विह्वलता अनुभव कर रही हूं मानो सैकड़ों मन वज़न अपने ऊपर लादकर लायी होऊं। शुक्र है भगवान का, बातचीत ख़त्म हो गयी। हम इसे ऐसे भूल जायेंगे मानो हमारे बीच कोई बात ही नहीं हुई थी और... और आप चले जायें। आप समझदार आदमी हैं, सब कुछ समझ जायेंगे...

(ख़ामोशी)

घबराहट से मेरी तो बुरी हालत हो गयी है।

आस्त्रोव: अगर आप दो महीने पहले यह चर्चा चलातीं तो शायद मैंने इस बारे में कुछ सोचा भी होता, लेकिन अब... **(कंधे झटकता है)** अगर वह यातना सहती है, तो, बेशक... लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही – आपको यह पूछ-ताछ करने की क्या ज़रूरत थी! **(उसकी आंखों में आंखें डालकर**

देखता है और उंगली दिखाकर धमकाता है) आप – बहुत चालाक हैं !

येलेना अन्द्रेयेव्ना : क्या मतलब है आपका ?

आस्त्रोव (हंसते हुए) : चालाक हैं ! मैं बहुत आसानी से इस बात से सहमत हो सकता हूं कि सोन्या यातना सहन करती है, लेकिन आपको यह पूछताछ करने की क्या ज़रूरत पड़ी थी ? **(उसे बोलने नहीं देता, जोश से)** कृपया चेहरे पर यह हैरानी का भाव नहीं लाइये। आप बहुत अच्छी तरह से यह जानती हैं कि मैं किसलिये हर दिन यहां आता हूं ... क्यों और किस के लिये मैं यहां आता हूं, आप ख़ूब यह जानती हैं। प्यारी शिकारिन, मैं भी बड़ा घाघ हूं, मैंने कच्ची गोलियां नहीं खेलीं ...

येलेना अन्द्रेयेव्ना (भौचक्की-सी) : मैं शिकारिन ? मेरी समझ में कुछ भी तो नहीं आ रहा।

आस्त्रोव : सुन्दर, फूले-फूले मुलायम रोयोंवाली शिकारी बिल्ली ... आपको बलि चाहिये ! मैं एक महीने से कुछ भी नहीं कर रहा हूं, मैंने सब कुछ छोड़-छाड़ दिया, बड़ी बेचैनी से आपको ही ढूंढ़ता रहता हूं – और आपको यह बहुत अच्छा लगता है, बेहद अच्छा लगता है। तो अब आप क्या चाहती हैं ? आपकी जीत हो चुकी है, यह तो आप पूछताछ के बिना भी जानती थीं। **(बांहों को एक-दूसरी पर रखकर सिर झुका देता है)** लीजिये, मैं आपकी सेवा में हाज़िर हूं। खा लीजिये, अपनी बलि को !

येलेना अन्द्रेयेव्ना : आप पागल हो गये हैं !

आस्त्रोव (खीसें निपोरता है) : आप शर्मीली हैं ...

येलेना अन्द्रेयेव्ना : जैसा आप समझते हैं, मैं उससे कहीं बेहतर और ऊंची हूं। क़सम खाकर कहती हूं ! **(जाना चाहती है)**

आस्त्रोव (उसका रास्ता रोकते हुए) : मैं आज चला जाऊंगा और फिर कभी यहां नहीं आऊंगा, लेकिन ... **(उसका हाथ पकड़ लेता है, इधर-उधर नज़र दौड़ाता है)** हम कहां मिलेंगे? जल्दी से बताइये – कहां? यहां कोई आ सकता है, जल्दी से बताइये। **(भावावेश से)** कैसी अनूठी, कितनी प्यारी हैं ... एक चुम्बन ... आप मुझे सिर्फ़ अपने महकते बालों को चूम लेने दीजिये ...

येलेना अन्द्रेयेव्ना: मैं क़सम खाती हूं ...

आस्त्रोव (उसकी बात काटते हुए) : क़सम खाने की क्या ज़रूरत है? क़सम नहीं खाइये। फालतू शब्दों की ज़रूरत नहीं ... ओह, क्या अनूठा रूप है! कितने प्यारे हाथ हैं! **(हाथ चूमता है)**

येलेना अन्द्रेयेव्ना : बस, काफ़ी है, आख़िर तो ... जाइये यहां से ... **(अपने हाथ छुड़ा लेती है)** आप अपनी सुध-बुध खो बैठे हैं।

आस्त्रोव : बताइये, बताइये न, कल कहां मिलेंगे हम दोनों? **(उसकी कमर में बांह डाल लेता है)** तुम देखती हो, ऐसा होना लाज़िमी है, हमें मिलना ही होगा। **(उसे चूमता है। इसी वक़्त वोय्नीत्स्की गुलाबों का गुलदस्ता लिये हुए आता है और दरवाज़े के पास रुक जाता है)**

येलेना अन्द्रेयेव्ना (वोय्नीत्स्की को देखे बिना) : मुझ पर रहम कीजिये ... मुझे छोड़ दीजिये ... **(आस्त्रोव की छाती पर सिर रखती है)** "नहीं! **(जाना चाहती है)**

आस्त्रोव (कमर से उसे पकड़े हुए) : कल दो बजे ... वन-प्रदेश में आ जाइये ... हां? हां? तुम आओगी न?

येलेना अन्द्रेयेव्ना (वोय्नीत्स्की को देखकर) : छोड़ दीजिये! **(बेहद झेंप महसूस करते हुए खिड़की के पास चली जाती है)**

बड़ी भयानक बात है यह!

वोय्नीत्स्की (गुलदस्ता मेज़ पर रख देता है, विह्वलता अनुभव करते हुए रूमाल से चेहरा और कालर के पीछे गर्दन को पोंछता है) : कोई बात नहीं ... हां ... कोई बात नहीं ...

आस्त्रोव (विह्वलता से) : अतीव आदरणीय इवान पेत्रोविच, आज मौसम बुरा नहीं है। सुबह कुछ बादल-वादल थे मानो बारिश होगी, लेकिन अब धूप निकल आयी है। सच तो यह है कि पतझर में मौसम बहुत अच्छा रहा है और बुवाई भी कुछ बुरी नहीं रहेगी। (**नक़्शे को लपेट लेता है**) हां, सिर्फ़ दिन छोटे हो गये हैं ... (**जाता है**)

येलेना अन्द्रेयेव्ना (जल्दी से वोय्नीत्स्की के पास आती है) : आप कोशिश कीजिये, अपना पूरा ज़ोर लगाइये कि हम पति-पत्नी आज ही यहां से चले जायें! सुनते हैं? आज ही!

वोय्नीत्स्की (चेहरा पोंछते हुए) : क्या? ओह, हां ... अच्छी बात है ... मैंने, सब कुछ देख लिया, सब कुछ ...

येलेना अन्द्रेयेव्ना (झल्लाते हुए) : सुनते हैं? मुझे आज ही यहां से जाना है!

(सेरेबर्याकोव, सोन्या, तेलेगिन और मरीना आते हैं)

तेलेगिन : हुज़ूर, ख़ुद मेरी अपनी तबीयत भी बहुत अच्छी नहीं है। दो दिन से ढीला-ढीला हूं। सिर कुछ अजीब-सा है ...

सेरेबर्याकोव : बाक़ी लोग कहां हैं? यह घर मुझे पसन्द नहीं। बिल्कुल भूल-भुलैया है। बड़े-बड़े छब्बीस कमरे हैं, सभी लोग इधर-उधर बिखर जाते हैं और कभी कोई नहीं मिलता। (**घण्टी बजाता है**) मारीया वसील्येव्ना और येलेना अन्द्रेयेव्ना को यहां बुला लाइये।

येलेना अन्द्रेयेव्ना: मैं यहीं हूं।

सेरेबर्याकोव: महानुभावो, कृपया बैठ जाइये।

सोन्या (येलेना अन्द्रेयेव्ना के पास आकर, बेचैनी से): क्या कहा उसने?

येलेना अन्द्रेयेव्ना: बाद में बात करेंगी।

सोन्या: तुम कांप रही हो? तुम बहुत विह्वल हो? (**पैनी नज़र से उसके चेहरे को देखती है**) मैं समझ रही हूं... उसने यह कहा है कि अब वह यहां नहीं आया करेगा... ठीक है न?

(ख़ामोशी)

कह दो – ठीक है?

(येलेना अन्द्रेयेव्ना हामी भरते हुए सिर झुकाती है)

सेरेबर्याकोव (तेलेगिन से): तबीयत अच्छी न हो, इसे तो फिर भी बर्दाश्त किया जा सकता है, लाचारी ठहरी। लेकिन मैं जो सहन नहीं कर सकता, वह है देहात की ज़िन्दगी का रंग-ढंग। मुझे ऐसे लगता है मानो मैं अपनी पृथ्वी से किसी अजनबी दुनिया में आ गिरा हूं। महानुभावो, आपसे अनुरोध करता हूं, बैठ जाइये! सोन्या!

(सोन्या उसकी बात नहीं सुनती, सिर झुकाये दुखी-सी खड़ी रहती है)

सोन्या!

(ख़ामोशी)

नहीं सुनती। (**मरीना से**) आया, तुम तो बैठ जाओ।

(**आया बैठकर जुर्राब बुनती है**)

महानुभावो, आपसे प्रार्थना करता हूं कि, यों कहा जा सकता, अपने को ध्यान की खूंटी पर टांग दीजिये। (**हंसता है**)

वोय्नीत्स्की (बेचैनी महसूस करते हुए) : शायद मेरी यहां ज़रूरत नहीं है? मैं जा सकता हूं?

सेरेबर्याकोव : नहीं, तुम्हारी तो यहां सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।

वोय्नीत्स्की : आप मुझसे क्या चाहते हैं?

सेरेबर्याकोव : आप ... तुम ऐसे झुंझला क्यों रहे हो?

(**ख़ामोशी**)

अगर तुम्हारे मामले में मुझसे कोई भूल-चूक हो गयी है, तो कृपया माफ़ कर दो।

वोय्नीत्स्की : तुम अपना यह अन्दाज़ रहने दो ... काम की बात करो ... तुम क्या चाहते हो?

(**मारीया वसील्येव्ना आती है**)

सेरेबर्याकोव : लीजिये, मां जी भी आ गयीं। तो मैं अपनी बात शुरू करता हूं, महानुभावो।

(**ख़ामोशी**)

महानुभावो, मैंने आपको यह सूचित करने के लिये यहां एकत्रित किया है कि हमारे यहां निरीक्षक आ रहा है।* ख़ैर, मज़ाक़

* गोगोल की कामदी 'निरीक्षक' के एक पात्र के शब्द। – अनु०

को गोली मारिये। मामला संजीदा है। महानुभावो, मैंने आपकी सहायता और सलाह लेने के लिये आपको यहां जमा किया है और आपकी हमेशा से बनी रहनेवाली कृपालुता को ध्यान में रखते हुए मैं यह आशा करता हूं कि मुझे आपकी सहायता और सलाह भी मिल जायेगी। मैं ठहरा पढ़ने-लिखने और किताबों की दुनिया में रहनेवाला आदमी, अमली ज़िन्दगी से मेरा कभी वास्ता नहीं रहा। जानकार लोगों के निर्देश के बिना मेरा काम नहीं चल सकता और इसलिये इवान पेत्रोविच तुमसे, इल्या इल्यीच आपसे, मां जी आपसे सलाह देने का अनुरोध करता हूं। बात यह है कि हम सबकी क़िस्मत की डोर भगवान के हाथ में है—मैं बूढ़ा हूं, बीमार रहता हूं और इसलिये वक़्त रहते अपनी सम्पत्ति का मामला ठीक-ठाक कर लेना चाहता हूं, क्योंकि इसका मेरे परिवार से सम्बन्ध है। मेरी ज़िन्दगी तो ख़त्म हो चुकी, मैं अपने बारे में कुछ नहीं सोचता, लेकिन मेरी जवान बीवी और बिन ब्याही बेटी है।

(ख़ामोशी)

गांव में रहते जाना मेरे लिये असम्भव है। गांव के लिये तो हम बने ही नहीं हैं। इस जागीर से हमें जो आमदनी होती है, उससे शहर में रहना मुमकिन नहीं। अगर, मान लीजिये कि हम जंगल बेच देते हैं तो यह एक असाधारण क़दम उठाना होगा और हम हर साल ऐसी आमदनी हासिल नहीं कर सकते। ऐसे उपाय खोजने की ज़रूरत है जो हमारे लिये कमोबेश एक ख़ास, पक्की आमदनी सुनिश्चित कर सकें। मैंने एक ऐसा उपाय सोचा है और विचार करने के लिये उसे आपके सामने पेश करता हूं। तफ़सीलों के चक्कर में पड़े बिना मैं मोटे तौर पर

इसकी रूप-रेखा प्रस्तुत करता हूं। हमारी जागीर में लगी पूंजी से हमें औसतन दो प्रतिशत से ज़्यादा आमदनी हासिल नहीं होती। मैं यह सुझांव पेश करता हूं कि इसे बेच दिया जाये। इससे हासिल होनेवाली रक़म को अगर हम ब्याज देनेवाली सरकारी हुंडियों में लगा दें, तो हमें चार से पांच प्रतिशत की आमदनी होगी। मेरे ख़्याल में तो ब्याज पर उठा दी जानेवाली रक़म के अलावा कुछ हज़ार और भी बच जायेंगे जिनसे हम फ़िनलैंड में कोई छोटा-सा बंगला भी ख़रीद सकेंगे।

वोय्नीत्स्की: ज़रा रुको... मुझे लगता है कि मेरे कान मुझे धोखा दे रहे हैं। तुमने जो कुछ कहा है, ज़रा उसे दोहरा दो।

सेरेबर्याकोव: रक़म को सूद देनेवाली सरकारी हुंडियों में लगा दिया जाये और उस रक़म में से जो कुछ बचे, उससे फ़िनलैंड में एक बंगला ख़रीद लिया जाये।

वोय्नीत्स्की: फ़िनलैंड नहीं, तुमने कुछ और कहा था।

सेरेबर्याकोव: मैं जागीर को बेचने का सुझाव दे रहा हूं।

वोय्नीत्स्की: हां, मेरा इसी से अभिप्राय था। तुम जागीर बेच दोगे, बहुत ख़ूब, बहुत बढ़िया विचार है... और बूढ़ी मां, सोन्या तथा मैं – हम कहां जायेंगे?

सेरेबर्याकोव: वक़्त आने पर हम इस सवाल पर भी सोच-विचार कर लेंगे। इसी समय तो सब कुछ तय नहीं किया जा सकता।

वोय्नीत्स्की: ज़रा रुको। लगता है कि मेरे दिमाग़ में अभी तक अक़्ल नाम की कोई चीज़ नहीं थी। अभी तक मैं बेवक़ूफ़ी की यही बात सोचता रहा कि यह जागीर सोन्या की है। मेरे दिवंगत पिता ने यह जागीर दहेज के रूप में मेरी बहन के लिये ख़रीदी थी। मैं अभी तक बुद्धू बना रहा, क़ानूनों को उनके असली रूप में नहीं समझा और यह मानता रहा कि बहन की

मौत के बाद जागीर सोन्या की हो गयी।

सेरेबर्याकोव : हां, जागीर सोन्या की है। कौन इस बात का खण्डन कर रहा है? सोन्या की सहमति के बिना मैं इसे बेचने का फ़ैसला नहीं करूंगा। इसके अलावा मैं सोन्या की भलाई के लिये ही ऐसा करना का सुझाव दे रहा हूं।

वोय्नीत्स्की : यह मेरी समझ से बाहर की बात है, मेरी समझ से बाहर है! या तो मेरा दिमाग़ चल निकला है, या... या...

मारीया वसील्येव्ना : जॉन, तुम अलेक्सान्द्र की बात का विरोध नहीं करो। यक़ीन मानो, वह हम से कहीं बेहतर यह जानता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है।

वोय्नीत्स्की : नहीं, मुझे पानी दीजिये। (**पानी पीता है**) आपका जो मन माने, वह कहते जाइये, कहते जाइये!

सेरेबर्याकोव : मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम इतने बेचैन क्यों हो रहे हो। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि मेरी योजना में कहीं कोई दोष नहीं है। अगर बाक़ी सभी को यह अच्छी नहीं लगेगी तो मैं इसे मानने के लिये मजबूर नहीं करूंगा।

(**ख़ामोशी**)

तेलेगिन (परेशान होते हुए) : हुज़ूर, मैं विज्ञान के प्रति न केवल आदर की, बल्कि रिश्तेदारी की सी भावना अनुभव करता हूं। मेरे भाई ग्रिगोरी इल्यीच का साला, शायद आप जानते हों, कोन्स्तान्तीन त्रोफ़ीमोविच लाकेदेमोनोव, एम० ए० पास था...

वोय्नीत्स्की : रुक जाओ, वेफ़र, हम बड़ी संजीदा बात कर रहे हैं... रुक जाओ, बाद में... (**सेरेबर्याकोव से**) तुम इससे

पूछ लो। यह जागीर इसके मामा से ख़रीदी गयी थी।

सेरेबर्याकोव: ओह, क्या ज़रूरत है मुझे पूछने की? किसलिये?

वोय्नीत्स्की: यह जागीर उस ज़माने में पचानवे हज़ार की ख़रीदी गयी थी। पिता जी ने सिर्फ़ सत्तर हज़ार दिये थे और पचीस हज़ार का क़र्ज़ रह गया था। अब ध्यान से सुनो... अगर मैंने बहन के हक़ में, जिसे बेहद प्यार करता था, अपने हिस्से की विरासत से इन्कार न किया होता तो यह जागीर कभी ख़रीदी न जाती। इतना ही नहीं, मैंने दस साल तक बैल की तरह काम करके बाक़ी क़र्ज़ चुकाया...

सेरेबर्याकोव: मैं पछता रहा हूं कि मैंने यह बातचीत शुरू की।

वोय्नीत्स्की: जागीर ऋण-मुक्त है और अगर यहां सब कुछ ठीक-ठाक है तो मेरी व्यक्तिगत कोशिशों की बदौलत। और अब, जब मैं बूढ़ा हो गया हूं, तो मुझे धक्के देकर यहां से निकाल देने की बात हो रही है!

सेरेबर्याकोव: मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम चाहते क्या हो!

वोय्नीत्स्की: पचीस साल तक मैंने इस जागीर का सारा काम-काज सम्भाला, पसीना बहाया, बहुत ही ईमानदार कारिन्दे की तरह तुम्हें पैसे भेजता रहा और तुमने एक बार भी मुझे धन्यवाद नहीं दिया। इस सारे वक़्त में – जवानी के सालों में और अब भी – मुझे तुमसे पांच सौ रूबल वार्षिक वेतन मिलता रहा – यह भी कोई वेतन है! और एक रूबल तक बढ़ाने की बात भी कभी तुम्हारे दिमाग़ में नहीं आयी!

सेरेबर्याकोव: इवान पेत्रोविच, मुझे कैसे मालूम हो सकता था यह? मैं व्यावहारिक आदमी नहीं और ऐसे मामलों के बारे

में कुछ भी नहीं समझता। तुम जितना भी चाहते, ख़ुद अपना वेतन बढ़ा सकते थे।

वोय्नीत्स्की : मैंने चोरी क्यों नहीं की? आप सभी लोग इस चीज़ के लिये मेरी भर्त्सना क्यों नहीं करते कि किसलिये मैंने चोरी नहीं की? मेरा चोरी करना बिल्कुल न्यायपूर्ण होता और अब मेरी भिखारी जैसी हालत न होती!

मारीया वसील्येव्ना (कड़ाई से) : जॉन!

तेलेगिन (घबराते हुए) : वान्या, मेरे प्यारे दोस्त, यह सब रहने दो, रहने दो... मैं कांप रहा हूं... अच्छे सम्बन्धों को बिगाड़ने की क्या ज़रूरत है? **(उसे चूमता है)** यह सब रहने दो।

वोय्नीत्स्की : पचीस साल तक अपनी इस मां के साथ मैं छछून्दर की तरह घर की चारदीवारी में दुबककर बैठा रहा... हमारे विचारों, हमारी भावनाओं में सिर्फ़ तुम ही तुम बसे रहते थे। दिन को हम तुम्हारी और तुम्हारी रचनाओं की चर्चा करते थे, तुम पर गर्व करते थे, बहुत ही आदर से तुम्हारा नाम लेते थे। रातें हम पत्र-पत्रिकायें और किताबें पढ़ने में, जिनसे अब मैं दिली नफ़रत करता हूं, बरबाद करते थे!

तेलेगिन : यह सब रहने दो, वान्या, रहने दो... मुझसे सहन नहीं हो रहा...

सेरेब्र्याकोव (ग़ुस्से से) : मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम चाहते क्या हो?

वोय्नीत्स्की : तुम हमारे लिये बहुत ऊंचे व्यक्ति थे और तुम्हारे लेख हमें ज़बानी याद थे... लेकिन अब मेरी आंखें खुल गयी हैं! मैं सब कुछ देख रहा हूं! तुम कला के बारे में लिखते हो, मगर ख़ाक भी तो नहीं समझते! तुम्हारी सारी रचनायें, जिन्हें मैं प्यार करता था, दो कौड़ी की भी नहीं हैं। तुमने हमारा

उल्लू बनाया !

सेरेबर्याकोव: महानुभावो ! आख़िर तो आप इसे अक़्ल से काम लेने को कहें ! मैं जाता हूं !

येलेना अन्द्रेयेव्ना: इवान पेत्रोविच, मैं आपसे यह मांग करती हूं कि आप चुप रहें ! सुनते हैं !

वोय्नीत्स्की: नहीं, मैं चुप नहीं रहूंगा ! (**सेरेबर्याकोव का रास्ता रोक लेता है**) ठहरो, मैंने अपनी बात पूरी नहीं की ! तुमने मेरी ज़िन्दगी बरबाद कर दी ! मैं जिया नहीं, जिया नहीं ! तुम्हारी मेहरबानी से मेरी ज़िन्दगी के सबसे अच्छे साल तबाह, बरबाद हो गये। तुम मेरे सबसे बड़े दुश्मन हो !

तेलेगिन: मैं यह सहन नहीं कर सकता ... नहीं कर सकता ... मैं जाता हूं ... (**बेहद बेचैन होता हुआ चला जाता है**)

सेरेबर्याकोव: तुम मुझसे क्या चाहते हो ? और मुझसे इस तरह बात करने का तुम्हें क्या हक़ है ? दो टके का आदमी ! अगर जागीर तुम्हारी है तो ले लो, मुझे उसकी ज़रूरत नहीं !

येलेना अन्द्रेयेव्ना: मैं तो इसी वक़्त इस जहन्नुम से जा रही हूं ! (**चिल्लाती है**) मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती !

वोय्नीत्स्की: ज़िन्दगी बरबाद हो गयी ! मैं प्रतिभाशाली हूं, समझदार हूं, साहसी हूं ... अगर मैं ढंग की ज़िन्दगी बिताता तो शायद शोपेनहावर, दोस्तोयेव्स्की बन जाता ... मैं बहकी-बहकी बातें कर रहा हूं ! मेरा दिमाग़ ख़राब हुआ जा रहा है ... अम्मां, मैं बिल्कुल हताश हो गया हूं ! अम्मां !

मारीया वसील्येव्ना (कड़ाई से): अलेक्सान्द्र की बात पर कान दो !

सोन्या (आया के सामने घुटनों के बल हो जाती है और उसके साथ चिपक जाती है): प्यारी आया ! प्यारी आया !

वोय्नीत्स्की: अम्मां ! मैं क्या करूं ! कुछ भी कहने की

ज़रूरत नहीं, कुछ नहीं कहिये! मैं खुद जानता हूं कि मुझे क्या करना चाहिये! **(सेरेबर्याकोव से)** तुम भी मुझे याद रखोगे! **(बीच के दरवाज़े से चला जाता है)**

(मारीया वसील्येव्ना उसके पीछे-पीछे जाती है)

सेरेबर्याकोव : महानुभावो, आख़िर यह सब क्या है? इस सिरफिरे से मेरा पिंड छुड़वाइये! मैं इसके साथ एक ही घर में नहीं रह सकता! वह यहां रहता है, **(बीच के दरवाज़े की तरफ़ इशारा करता है)** लगभग बिल्कुल मेरे पास... वह गांव में, हमारे उपभवन में जा रहे या फिर मैं यहां से चला जाऊंगा, लेकिन उसके साथ एक ही घर में मैं नहीं रह सकता...

येलेना अन्द्रेयेव्ना (पति से) : हम आज ही यहां से चले जायेंगे! इसी वक़्त इस चीज़ का प्रबन्ध करने को कहना चाहिये!

सेरेबर्याकोव : दो टके का आदमी!

सोन्या (घुटनों के बल पिता की ओर मुड़ती है, परेशानी से, आंसू बहाते हुए कहती है) : रहमदिल होना चाहिये, पापा! मैं और मामा वान्या, हम दोनों ही कितने बदक़िस्मत हैं! **(हताशा पर क़ाबू पाते हुए)** याद कीजिये, जब आप जवान थे, तो मामा वान्या और नानी रातों को बैठकर आपके लिये किताबों के अनुवाद करते थे, आपके काग़ज़ों की नक़लें उतारते थे! सारी-सारी रात बैठकर! मैं और मामा वान्या लगातार काम करते थे, अपने ऊपर एक कौड़ी खर्च करते हुए भी घबराते थे और सब कुछ आपको ही भेज देते थे... हमने हराम की रोटी नहीं खाई! मैं यह क्या कह रही हूं, कैसी अटपटी बातें कर रही हूं, लेकिन आपको हमें समझना चाहिये, पापा। रहम-दिल होना चाहिये!

येलेना अन्द्रेयेव्ना (बेचैनी से, पति से) : अलेक्सान्द्र, भगवान के लिये जाकर उसे सारी बात समझा दो ... मिन्नत करती हूं।

सेरेबर्याकोव : ठीक है, मैं जाकर उससे सारी बात साफ़ कर लेता हूं ... मैं उसे किसी तरह का दोष नहीं देता, उससे नाराज़ नहीं हूं, लेकिन आपको यह तो मानना होगा कि उसका रवैया, अगर और कुछ नहीं, तो अजीब ज़रूर है। अच्छी बात है, मैं उसके पास जाता हूं। **(बीच के दरवाज़े से जाता है)**

येलेना अन्द्रेयेव्ना : उसके साथ नर्मी से पेश आना, उसे शान्त कर दो ... **(उसके पीछे जाती है)**

सोन्या (आया के साथ चिपकते हुए) : प्यारी आया ! प्यारी आया !

मरीना : कोई बात नहीं, बिटिया। मुर्गे ज़रा चोंचें लड़ा लेंगे और ठण्डे पड़ जायेंगे ... चोंचें लड़ा लेंगे – और ठण्डे पड़ जायेंगे ...

सोन्या : प्यारी आया !

मरीना (उसका सिर सहलाती है) : ऐसे कांप रही हो मानो सख़्त पाले में ठिठुर गयी हो। ऐसे घबराओ नहीं, घबराओ नहीं, बेसहारा बिटिया, भगवान बड़ा दयालु है। लाइम के पत्तों या झड़बेरी के काढ़े से यह जूड़ी दूर हो जायेगी ... ऐसे दुखी नहीं होओ, लाचार, बेसहारा बिटिया ... **(बीच के दरवाज़े की ओर देखते हुए, खीझकर)** कितना शोर मचा रहे हैं, शैतान कहीं के !

(मंच के पीछे गोली चलने की आवाज़ सुनाई देती है। येलेना अन्द्रेयेव्ना की चीख़-चिल्लाहट सुनाई पड़ती है। सोन्या कांपती है)

बुरा हो इनका !

सेरेबर्याकोव (डर से लड़खड़ाता हुआ भागा आता है) : उसे क़ाबू कीजिये ! उसे क़ाबू कीजिये ! उसका दिमाग़ चल निकला है !

(येलेना अन्द्रेयेव्ना और वोय्नीत्स्की दरवाज़े के पास एक-दूसरे से उलझ रहे हैं)

येलेना अन्द्रेयेव्ना (उससे पिस्तौल छीनने की कोशिश करते हुए) : मुझे दे दीजिये पिस्तौल ! दे दीजिये, मैं कह रही हूं !

वोय्नीत्स्की : मुझे छोड़ दीजिये, हेलेन, छोड़ दीजिये मुझे ! **(मुक्त होकर मंच पर भागा आता है और नज़रों से सेरेबर्याकोव को ढूंढ़ता है)** कहां है वह ? हां, वह रहा ! **(उस पर गोली चलाता है)** ठांय !

(ख़ामोशी)

नहीं लगी गोली ? फिर निशाना चूक गया ? **(ग़ुस्से से)** ओह, शैतान, शैतान ... बुरा हो शैतान का ... **(पिस्तौल को फ़र्श पर पटक देता है और थककर कुर्सी पर बैठ जाता है। सेरेबर्याकोव के होश-हवास ग़ायब हैं। येलेना अन्द्रेयेव्ना दीवार का सहारा लेती है, उसे मूर्च्छा-सी आ रही है)**

येलेना अन्द्रेयेव्ना : मुझे यहां से ले जाइये ! ले जाइये, मार डालिये ! लेकिन ... मैं यहां नहीं रह सकती, नहीं रह सकती !

वोय्नीत्स्की (बेहद निराशा से) : ओह, मैं यह क्या कर रहा हूं ! क्या कर रहा हूं !

सोन्या (धीरे-धीरे) : प्यारी आया ! प्यारी आया !

(परदा गिरता है)

चौथा अंक

(इवान पेत्रोविच का कमरा। यही उसके सोने का कमरा और दफ़्तर भी है। खिड़की के पास एक बड़ी मेज़ पर आमदनी और ख़र्च के रजिस्टर तथा सभी तरह के काग़ज़ रखे हैं, लिखने की मेज़, अलमारियां और तराज़ू भी है। आकार में कुछ छोटी मेज़ आस्त्रोव के लिये है। इस मेज़ पर ड्राइंग की चीज़ें, रंग हैं, पास में फ़ाइल है। एक पिंजरे में चिड़िया है। दीवार पर अफ़्रीका का नक़्शा है जिसकी यहां शायद किसी को ज़रूरत नहीं। मोमजामे से मढ़ा हुआ बहुत बड़ा सोफ़ा है। बायीं ओर भीतर के कमरों में ले जानेवाला दरवाज़ा है। दायीं तरफ़ ड्योढ़ी की तरफ़ ले जानेवाला दरवाज़ा है। दायें दरवाज़े के पास एक दरी बिछी हुई है, ताकि किसान लोग कमरे को गन्दा न करें। पतझर की शाम। निस्तब्धता।

तेलेगिन और मरीना – एक-दूसरे के सामने बैठे हुए जुर्राब बुननेवाले ऊन का गोला बना रहे हैं।)

तेलेगिन : जल्दी से ख़त्म कीजिये इस काम को मरीना तिमोफ़ेयेव्ना, वरना हमें अभी विदा लेने के लिये बुला लिया जायेगा। बग्घी लाने को कह भी दिया गया है।

मरीना (जल्दी-जल्दी गोला बनाने की कोशिश करती है) : बस, थोड़ा-सा ही रह गया है।

तेलेगिन : ये लोग ख़ार्कोव जा रहे हैं। वहीं रहेंगे।

मरीना : इसी में भलाई है।

तेलेगिन : डर गये... येलेना अन्द्रेयेव्ना कहती हैं कि वह "एक घण्टा भी यहां नहीं रहना चाहतीं... चलो, चलो की रट लगाये हैं... कहती हैं ख़ार्कोव में कुछ समय तक रहेंगे,

जब वहां रहने-सहने की आदत हो जायेगी तो सामान मंगवा लेंगे..." बस, थोड़ी-सी चीज़ें लेकर जा रहे हैं। तो मतलब यह है, मरीना तिमोफ़ेयेव्ना, इनकी क़िस्मत में यहां रहना नहीं लिखा है। क़िस्मत में नहीं है... विधाता ने पहले से ही यह निर्णय कर दिया है।

मरीना: और इसी में भलाई है। कैसा गुल-गपाड़ा मचा है आज यहां, गोलियां तक चला दीं – डूब मरने की बात है!

तेलेगिन: हां, यह आइवाज़ोव्स्की द्वारा चित्र बनाने का बढ़िया विषय हो सकता है।

मरीना: हे भगवान, मेरी आंखों को तो यह सब न देखना पड़ता।

(**ख़ामोशी**)

फिर से पहले की तरह रहने लगेंगे। सुबह सात बजे के बाद चाय-नाश्ता, बारह बजे के बाद दिन का भोजन और फिर शाम का खाना – सब कुछ वैसे ही, जैसे भले लोगों के यहां होता है... दीन-धर्म के मुताबिक़। (**आह भरकर**) ऐसा कहना अच्छा तो नहीं, लेकिन बहुत दिनों से मैंने सेंवइयां नहीं खायीं।

तेलेगिन: हां, बहुत दिनों से हमारे यहां सेंवइयां नहीं बनीं।

(**ख़ामोशी**)

बहुत दिनों से... मरीना तिमोफ़ेयेव्ना, आज सुबह मैं गांव में से जा रहा था, पीछे से दुकानदार ने आवाज़ दी: "अरे, ओ टुकड़ख़ोर!" मैं तो ज़हर का घूंट पीकर रह गया!

मरीना: तुम इस बात की ओर ध्यान ही न दो, भैया! भगवान के दरबार में हम सभी टुकड़ख़ोर हैं। क्या तुम, क्या

सोन्या, क्या इवान पेत्रोविच – कोई भी तो निठल्ला नहीं बैठा रहता, हम सभी मेहनत करते हैं! सभी... सोन्या कहां है?

तेलेगिन: बाग़ में। डाक्टर के साथ इवान पेत्रोविच को ढूंढ़ रही है। दोनों को चिन्ता है कि कहीं वह अपने साथ ही कोई बुरी बात न कर बैठे।

मरीना: उसकी पिस्तौल कहां है?

तेलेगिन (फुसफुसाकर): मैंने तहख़ाने में छिपा दी है।

मरीना (व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ): हे भगवान!

(अहाते की ओर से वोय्नीत्स्की और आस्त्रोव आते हैं)

वोय्नीत्स्की: मेरा पिंड छोड़ दो। **(मरीना और तेलेगिन से)** यहां से चले जाइये, ज़्यादा नहीं तो कम से कम एक घण्टे के लिये मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिये। कोई मेरी चिन्ता करे, मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं।

तेलेगिन: अभी जा रहा हूं, वान्या। **(पंजों के बल जाता है)**

मरीना: हाय, हाय, कैसे भुनभुना रहा है! **(ऊन समेटकर जाती है)**

वोय्नीत्स्की: मेरा पिंड छोड़ दो!

आस्त्रोव: बड़ी ख़ुशी से। मुझे तो बहुत पहले ही यहां से चले जाना चाहिये था। लेकिन दोहराता हूं कि जब तक तुम मुझे मेरी चीज़ नहीं लौटाओगे, मैं नहीं जाऊंगा।

वोय्नीत्स्की: मैंने तुम्हारी कोई चीज़ नहीं ली।

आस्त्रोव: बड़ी संजीदगी से कह रहा हूं – मुझे अब और देर नहीं कराओ! मैं तो बहुत पहले ही चला गया होता।

वोय्नीत्स्की: मैंने तुम्हारी कोई चीज़ नहीं ली।

(**दोनों बैठ जाते हैं**)

आस्त्रोव: सच कहते हो? ख़ैर, मैं थोड़ा और इन्तज़ार कर लेता हूं, मगर उसके बाद बुरा नहीं मानना, ज़ोर-ज़बर्दस्ती से काम लेना पड़ेगा। हम तुम्हारे हाथ-पांव बांधकर तलाशी लेंगे। तुम मेरी बात को मज़ाक़ नहीं समझना।

वोय्नीत्स्की: जो चाहो, वह करो।

. (**ख़ामोशी**)

मेरी हिमाक़त की भी कोई हद नहीं – दो बार गोली चलाई और दोनों बार निशाना चूक गया। इसके लिये मैं कभी अपने को माफ़ नहीं करूंगा!

आस्त्रोव: अगर गोली चलाने को बहुत ही मन हो रहा था तो अपने सिर को निशाना बनाया होता।

वोय्नीत्स्की (**कंधे झटककर**): अजीब क़िस्सा है। मैंने ख़ून करने की कोशिश की, लेकिन मुझे गिरफ़्तार नहीं किया जा रहा, मुझ पर मुक़दमा नहीं चलाया जा रहा। मतलब यह कि मुझे पागल माना जा रहा है। (**द्वेषपूर्ण हंसी**) मैं – पागल हूं, लेकिन वे पागल नहीं हैं जो प्रोफ़ेसर का मुखौटा लगाकर, विद्वत्ता का ढोंग करके अपनी योग्यता के दीवालियेपन, अपनी मन्दबुद्धि और लज्जाजनक निर्दयता पर परदा डालते हैं। वे पागल नहीं हैं जो बुड्ढों से शादियां करती हैं और फिर सभी के सामने उन्हें धोखा देती हैं। मैंने देखा था, देखा था कि कैसे तुमने उसका आलिंगन किया था!

आस्त्रोव: हां जनाब, किया था मैंने उसका आलिंगन और तुम्हें मिला यह ठेंगा। (**नाक चढ़ाता है**)

वोय्नीत्स्की (**दरवाज़े की ओर देखते हुए**): नहीं, पगली तो है यह धरती जो अभी तक तुम्हारा बोझ सहन करती है!

आस्त्रोव : बेवक़ूफ़ी की बात है।

वोय्नीत्स्की : चलो ऐसा ही सही — मैं पागल हूं, सभी ज़िम्मेदारियों से आज़ाद हूं, मुझे बेवक़ूफ़ी की बातें करने का हक़ हासिल है।

आस्त्रोव : पुराना राग अलाप रहे हो। तुम पागल नहीं, बस, सनकी हो, मसख़रे हो। पहले मैं भी हर सनकी-ख़ब्ती को बीमार, सिरफिरा मानता था, लेकिन अब मेरा यह मत हो गया है कि ख़ब्ती होना ही मानव की सामान्य स्थिति है। तुम बिल्कुल सामान्य हो।

वोय्नीत्स्की (चेहरे को हाथों से ढांप लेता है) : बेहद शर्म आ रही है मुझे! काश, तुम जान सकते कि कैसी हालत हो रही है मेरी शर्म से! शर्म की इस उग्र भावना से किसी भी पीड़ा की तुलना नहीं हो सकती। **(बहुत दुखी होते हुए)** दिल टुकड़े-टुकड़े हुआ जा रहा है! **(मेज़ की तरफ़ झुक जाता है)** मैं क्या करूं? क्या करूं मैं?

आस्त्रोव : कुछ भी नहीं।

वोय्नीत्स्की : कोई दवाई दो मुझे! ओह, मेरे भगवान... मैं सैंतालीस साल का हूं। अगर यह मान लिया जाये कि साठ तक ज़िन्दा रहूंगा तो अभी तेरह बरस तो मुझे और जीना होगा। बहुत लम्बा अरसा है यह! कैसे जी पाऊंगा मैं ये तेरह साल? क्या करूंगा, किस तरह बिताऊंगा इन सालों को? ओह तुम समझो... **(बड़े तपाक से आस्त्रोव का हाथ दबाता है)** ओह, तुम समझो, काश ज़िन्दगी के बाक़ी सालों को किसी दूसरे ढंग से जीना सम्भव होता। काश किसी सुहानी, प्यारी सुबह को मेरी आंख खुलती और मैं यह महसूस करता कि नये सिरे से जीने लगा हूं, कि बीता हुआ सब कुछ भुलाया जा चुका है, धुएं की तरह हवा में ग़ायब हो गया है। ओह! **(रोता है)**

नयी ज़िन्दगी शुरू की जाये... तुम बताओ मुझे उसे कैसे शुरू किया जाये... कहां से शुरू किया जाये...

आस्त्रोव (झल्लाकर) : तुम भी एक ही हज़रत हो! किस नयी ज़िन्दगी की बात कर रहे हो! कुछ नहीं बने-बनायेगा हम दोनों का।

वोय्नीत्स्की : सच?

आस्त्रोव : मुझे पूरा यक़ीन है इसका।

वोय्नीत्स्की : मुझे कोई दवाई दो... (**दिल की तरफ़ इशारा करता है**) जलन-सी हो रही है यहां।

आस्त्रोव (झुंझलाहट से चिल्लाता है) : हटाओ यह सब! (**नर्म पड़ते हुए**) जो हमारे मरने के सौ, दो सौ साल बाद जियेंगे और जो इसलिये हमें तिरस्कार की दृष्टि से देखेंगे कि हमने ज़िन्दगी ऐसी बेवक़ूफ़ी और बेहूदगी से बिताई है – शायद वे सुखी होने के साधन ढूंढ़ पायेंगे, लेकिन हमारे लिये... हमारे-तुम्हारे लिये तो सिर्फ़ एक ही उम्मीद बाक़ी रह गयी है। यही उम्मीद कि जब हम अपनी क़ब्रों में सो रहे होंगे तो सपने देख सकेंगे, शायद कुछ प्यारे सपने भी। (**आह भरता है**) यह बात है मेरे भाई! इस पूरे इलाक़े में सिर्फ़ दो ही बुद्धिजीवी ढंग के आदमी थे – तुम और मैं। लेकिन कोई दसेक साल तक एक ही ढर्रे की तुच्छ दलदली ज़िन्दगी हमें घसीटती रही, उसने अपनी सडांध से हमारे ख़ून में ज़हर घोल दिया और हम भी अन्य सभी जैसे कमीने बन गये। (**सजीवता से**) लेकिन तुम मेरा उल्लू नहीं बनाओ। मेरी जो चीज़ ली है, वह वापस कर दो।

वोय्नीत्स्की : मैंने तुम्हारी कोई चीज़ नहीं ली।

आस्त्रोव : तुमने मेरे दवाइयों के बैग में से मार्फ़िया की शीशी निकाली है।

(ख़ामोशी)

सुनो, अगर तुमने मरने की ही ठान ली है तो जंगल में जाकर अपने को गोली मार लो! मार्फ़िया मुझे लौटा दो, नहीं तो तरह-तरह की बातें बनेंगी, उल्टे-सीधे अनुमान लगाये जायेंगे, लोग-बाग सोचेंगे कि मैंने तुम्हें मार्फ़िया दिया है... मेरे लिये तो इतना ही काफ़ी है कि तुम्हारी लाश की चीर-फाड़ करनी पड़ेगी... तुम क्या समझते हो कि यह दिलचस्प काम है?

(सोन्या आती है)

वोय्नीत्स्की : मुझे तंग नहीं करो!

आस्त्रोव (सोन्या से) : सोफ़्या अलेक्सान्द्रोव्ना, आपके मामा ने मेरे दवाइयों के बैग में से मार्फ़िया की शीशी निकाल ली है और अब देते नहीं। आप इनसे कहिये कि यह... यह बेवक़ूफ़ी की बात है। और फिर मेरे पास वक़्त भी नहीं है। मुझे जाना चाहिये।

सोन्या : मामा वान्या, आपने ली है मार्फ़िया की शीशी?

(ख़ामोशी)

आस्त्रोव : ली है। मुझे पूरा यक़ीन है।

सोन्या : लौटा दीजिये। किसलिये हमें डराते हैं? **(प्यार से)** लौटा दीजिये, मामा वान्या! शायद मैं आपसे कुछ कम क़िस्मत की मारी नहीं हूं, लेकिन आपकी तरह हताश नहीं होती हूं। मैं सहन करती हूं और जब तक मेरी ज़िन्दगी का ख़ुद ही अन्त नहीं हो जायेगा, सहन करूंगी... तुम भी सहन करो।

(ख़ामोशी)

दे दीजिये शीशी। (**उसके हाथ चूमती है**) मेरे प्यारे, मेरे अच्छे, मेरे अच्छे मामा, दे दीजिये! (**रोता है**) आप दयालु हैं, हम पर तरस खाकर वापस दे देंगे शीशी। सब्र से काम लीजिये, मामा जी! सब्र से!

वोय्नीत्स्की (**मेज़ की दराज़ से शीशी निकालकर आस्त्रोव को देता है**): लो, सम्भालो! (**सोन्या से**) हमें जल्दी से काम में लग जाना चाहिये, जल्दी से कुछ करना चाहिये वरना मुझसे यह बर्दाश्त नहीं होगा... बर्दाश्त नहीं होगा...

सोन्या: हां, हां, काम करना चाहिये। अपने इन लोगों के जाते ही हम काम करने बैठ जायेंगे... (**जल्दी-जल्दी मेज़ पर काग़ज़ ठीक करती है**) हमारे यहां सब कुछ गड़बड़ हुआ पड़ा है।

आस्त्रोव (**मार्फ़िया की शीशी बैग में रखकर उसकी पेटियां कसता है**): अब रवाना हुआ जा सकता है।

येलेना अन्द्रेयेव्ना (**आती है**): इवान पेत्रोविच, आप यहां हैं? हम लोग अभी जा रहे हैं... अलेक्सान्द्र के पास जाइये, वह आपसे कुछ कहना चाहते हैं।

सोन्या: जाइये, मामा वान्या। (**वोय्नीत्स्की का हाथ अपने हाथ में लेती है**) आइये चलें। आपको और पापा को अवश्य सुलह कर लेनी चाहिये। यह बिल्कुल ज़रूरी है।

(सोन्या और वोय्नीत्स्की जाते हैं)

येलेना अन्द्रेयेव्ना: मैं जा रही हूं। (**आस्त्रोव की ओर हाथ बढ़ाती है**) नमस्ते।

आस्त्रोव: अभी जा रही हैं?

येलेना अन्द्रेयेव्ना: हां, बग्घी आ भी गयी है।

आस्त्रोव: नमस्ते।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : आपने आज मुझसे वादा किया था कि यहां से चले जायेंगे।

आस्त्रोव : मुझे अपना वादा याद है। अभी चला जाऊंगा।

(खामोशी)

डर गयीं? **(उसका हाथ अपने हाथ में ले लेता है)** क्या यह इतना भयानक है?

येलेना अन्द्रेयेव्ना : हां।

आस्त्रोव : फिर भी रुक जायें न? क्यों? कल वन-प्रदेश में...

येलेना अन्द्रेयेव्ना : नहीं... तय हो चुका है... मैं इसीलिये तो इतनी दिलेरी से आपसे आंख मिला सकती हूं कि जाने की बात तय हो चुकी है... मैं आपसे एक प्रार्थना करती हूं – मेरे बारे में कुछ बेहतर राय रखें। मैं चाहती हूं कि आप मेरा आदर करें।

आस्त्रोव : हटाइये यह सब! **(संकेत द्वारा खीझ व्यक्त करता है)** रुक जाइये, आपकी मिन्नत करता हूं। यह मान लीजिये कि इस दुनिया में आपके करने को कुछ है नहीं, आपके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं, कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसमें आप अपना ध्यान लगा सकें और देर-सबेर आप अपने दिल को क़ाबू में नहीं रख पायेंगी – यह होकर रहेगा। तो ख़ार्कोव या कूर्स्क के बजाय यही बेहतर होगा कि आप यहां, प्राकृतिक सौन्दर्य की गोद में ऐसा करें... कम से कम काव्यमय वातावरण तो है, पतझर भी यहां इतनी सुन्दर है... यहां वन-प्रदेश है, तुर्गेनेव की रुचि के अनुरूप ख़स्ताहाल हवेलियां हैं...

येलेना अन्द्रेयेव्ना : हंसी आती है आप पर... मैं आपसे नाराज़ हूं, लेकिन फिर भी आपको याद करके मुझे ख़ुशी होगी। आप

दिलचस्प, अपने ही ढंग के आदमी हैं। हम फिर कभी नहीं मिलेंगे, इसलिये दिल की बात छिपाने में भी क्या तुक है? मैं तो आपकी ओर कुछ खिंच भी गयी थी। तो आइये, एक-दूसरे से हाथ मिलायें और दोस्तों की तरह विदा लें। मेरे बारे में बुरा नहीं सोचियेगा।

आस्त्रोव (हाथ मिलाता है): हां, चली जाइये... (**सोचते हुए**) आप मानो अच्छी, सहृदय महिला हैं, फिर भी आपके पूरे व्यक्तित्व में जैसे कोई अजीब बात है। आप अपने पति के साथ यहां आयीं और वे सभी जो यहां काम करते थे, किसी चीज़ में जुटे रहते थे, कुछ बनाते-रचते थे, उन सभी को अपना काम-काज छोड़ना पड़ा और गर्मी भर वे आपके पति के वात-रोग और आप में उलझे रहे। आप दोनों ने हम सबको अपनी तरह काहिल बना दिया। काम से मेरा ध्यान हट गया, एक महीने तक मैंने कुछ नहीं किया, जबकि इसी बीच लोग बीमार हुए, मेरे जंगलों और वन-झाड़ियों में किसान अपने ढोर-डंगर चराते रहे... तो अपने पति के साथ आप जहां भी जाती हैं, वहीं तबाही लाती हैं... ज़ाहिर है कि मैं मज़ाक़ कर रहा हूं, लेकिन फिर भी... अजीब बात है, और मुझे इसका यक़ीन है कि अगर आप यहां और रुक जातीं तो बहुत बड़ी क्षति होती। मैं भी तबाह हो जाता और आपके लिये भी बुरा होता। तो चली जाइये। कामदी ख़त्म हुई!

येलेना अन्द्रेयेव्ना (उसकी मेज़ से पेंसिल उठाकर उसे जल्दी से छिपा लेती है•): यह पेंसिल मैं निशानी के तौर पर ले रही हूं।

आस्त्रोव: कुछ अजीब-सी बात है... हम परिचित थे और अचानक, न जाने क्यों... फिर कभी नहीं मिलेंगे। इस दुनिया में हमेशा ऐसा ही होता है... जब तक यहां कोई नहीं, जब तक

मामा वान्या फूलों का गुलदस्ता लेकर नहीं आता, विदा होने से पहले ... आप मुझे ... अपने को चूम लेने दें ... अनुमति है? **(गाल चूमता है)** बस ... अब सब कुछ ठीक है।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : आपके लिये सभी तरह की शुभ कामनायें करती हूं। **(इधर-उधर नज़र दौड़ाती है)** ज़िन्दगी में एक बार तो मैं भी ऐसा कर सकती हूं! **(ज़ोर से उसका आलिंगन करती है और दोनों झटपट एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं)** अब जाना चाहिये।

आस्त्रोव : जल्दी से चली जाइये। अगर बग्घी आ गयी है तो अब चले जायें आप लोग।

येलेना अन्द्रेयेव्ना : लगता है कि लोग इधर आ रहे हैं।

(दोनों कान लगाकर सुनते हैं)

आस्त्रोव : कामदी ख़त्म!

(सेरेबर्याकोव, वोय्नीत्स्की, किताब लिये मारीया वसील्येव्ना, तेलेगिन और सोन्या आते हैं)

सेरेबर्याकोव (वोय्नीत्स्की से) : जो दिल में गुस्सा-गिला रखे, उसका बुरा हो। आज जो कुछ हुआ, उसके बाद के कुछ घण्टों में मैंने इतना कुछ अनुभव किया, इतना कुछ फिर से सोचा-विचारा कि मुझे लगता है – मैं आनेवाली पीढ़ियों को यह शिक्षा देने के लिये कि कैसे जीना चाहिये, पूरी किताब लिख सकता हूं। मैं ख़ुशी से तुम्हें माफ़ करता हूं और ख़ुद भी तुमसे मुझे माफ़ कर देने का अनुरोध करता हूं। तो अब विदा! **(दोनों तीन बार एक-दूसरे को चूमते हैं)**

वोय्नीत्स्की : तुम्हें नियमित रूप से वही रक़म मिलती रहेगी

जो पहले मिला करती थी। सब कुछ पहले की तरह ही होगा।

(येलेना अन्द्रेयेव्ना सोन्या को गले लगाती है)

सेरेबर्याकोव (मारीया वसील्येव्ना का हाथ चूमता है) : मां जी ...

मारीया वसील्येव्ना (उसे चूमते हुए) : अलेक्सान्द्र, अपना नया फ़ोटो खिंचवाकर मुझे भिजवा दीजियेगा। आप तो जानते ही हैं कि मैं आपको कितना प्यार करती हूं।

तेलेगिन : नमस्ते हुजूर ! हमें भूलियेगा नहीं।

सेरेबर्याकोव (बेटी को चूमकर) : नमस्ते ... सबको नमस्ते ! **(आस्त्रोव से हाथ मिलाते हुए)** आपने अपनी उपस्थिति से वातावरण को सुखद बनाया, इसके लिये धन्यवाद ... मैं आपके सोचने के ढंग, आपके शौक़, आपके जोश की इज़्ज़त करता हूं, लेकिन मुझ बूढ़े को विदा होते समय एक टिप्पणी करने की अनुमति दीजिये – महानुभावो, काम करना चाहिये ! काम करना चाहिये ! **(सबको सिर झुकाता है)** सब के लिये शुभ कामना करता हूं ! **(जाता है, मारीया वसील्येव्ना और सोन्या उसके पीछे-पीछे जाती हैं)**

वोय्नीत्स्की (बड़े प्यार से येलेना अन्द्रेयेव्ना का हाथ चूमता है) : तो विदा ... माफ़ी चाहता हूं ... अब फिर कभी मुलाक़ात नहीं होगी।

येलेना अन्द्रेयेव्ना (द्रवित होकर) : विदा, मेरे अच्छे दोस्त। **(उसका सिर चूमकर जाती है)**

आस्त्रोव (तेलेगिन से) : वेफ़र, ज़रा वहां कह दो कि मेरी बग्घी भी ले आयें।

तेलेगिन : अभी कह देता हूं, प्यारे। **(जाता है)**

(आस्त्रोव और वोय्नीत्स्की ही रह जाते हैं)

आस्त्रोव (मेज़ पर से रंग उठाकर सूटकेस में छिपा देता है) : तुम उन्हें विदा करने क्यों नहीं जाते ?

वोय्नीत्स्की : जाने दो उन्हें , लेकिन मैं ... मैं नहीं जा सकता। मेरा मन बहुत भारी है। जल्दी से जल्दी किसी काम में जुटना चाहिये ... काम , काम करना चाहिये ! **(मेज़ पर पड़े काग़ज़ों को उलटता-पलटता है)**

(ख़ामोशी , घण्टियों की आवाज़ सुनाई देती है)

आस्त्रोव : चले गये। प्रोफ़ेसर तो शायद बहुत ख़ुश होगा। जन्नत का वादा करने पर भी वह अब यहां नहीं आयेगा।

मरीना (आती है) : चले गये। **(आरामकुर्सी पर बैठकर जुर्राब बुनने लगती है)**

सोन्या (आती है) : चले गये। **(आंसू पोंछती है)** भगवान करे कि राज़ी-ख़ुशी पहुंच जायें। **(मामा से)** तो मामा वान्या , लाइये , कुछ काम करें।

वोय्नीत्स्की : काम , काम ...

सोन्या : बहुत दिनों से , बहुत ही दिनों से हम इस मेज़ पर इकट्ठे नहीं बैठे। **(मेज़ पर लैम्प जलाती है)** लगता है कि दवात में स्याही नहीं है ... **(दवात लेकर अलमारी के पास जाती है और स्याही डालती है)** लेकिन मेरा मन उदास हो रहा है कि वे चले गये।

मारीया वसील्येव्ना (धीरे-धीरे आती है) : चले गये ! **(बैठकर पढ़ने में मगन हो जाती है)**

सोन्या (मेज़ के सामने बैठकर रजिस्टर के पन्ने उलटती-पलटती है) : मामा वान्या , आइये , सबसे पहले तो बिल तैयार

कर लें। इस मामले में हमारे यहां तो बहुत ही गड़बड़ हुई पड़ी है। आज फिर बिल लेने आये थे। लिखिये। आप एक बिल लिखें और मैं दूसरा लिखती हूं।

वोय्नीत्स्की (लिखता है) : "श्रीमान ... के नाम बिल ..."

(दोनों चुपचाप लिखते हैं)

मरीना (जम्हाई लेती है) : नींद आ रही है ...

आस्त्रोव : ख़ामोशी। कलमें चीं-चीं कर रही हैं, झींगुर झीं-झीं कर रहा है। गर्माहट है, आराम है ... यहां से जाने को मन नहीं हो रहा।

(घण्टियां सुनाई देती हैं)

लो बग्घी आ रही है ... तो प्यारे दोस्तो, अब आपसे विदा लेना ही बाक़ी रह गया है। विदा ली जाये और – चल दिया जाये। **(नक़्शे को फ़ाइल में रखता है)**

मरीना : ऐसी उतावली करने की क्या बात थी? बैठे रहते।

आस्त्रोव : यह सम्भव नहीं।

वोय्नीत्स्की (लिखता है) : "और पहले भी दो रूबल पचहत्तर कोपेक आपके नाम हैं ..."

(नौकर आता है)

नौकर : मिख़ाईल ल्वोविच, बग्घी आ गयी।

आस्त्रोव : हां, मैंने घण्टियों की आवाज़ सुन ली है। **(उसे दवाइयों का बैग, सूटकेस और फ़ाइल देता है)** लो, यह ले जाओ। ध्यान रखना, फ़ाइल मुड़-मुड़ा न जाये।

नौकर : अच्छी बात है। (**जाता है**)

आस्त्रोव : तो प्यारे दोस्तो ... (**विदा लेना शुरू करता है**)

सोन्या : तो अब कब मुलाक़ात होगी ?

आस्त्रोव : शायद गर्मियों से पहले तो नहीं। जाड़े में तो इसकी कम ही सम्भावना है ... ज़ाहिर है कि अगर मेरी कोई ज़रूरत पड़ जाये तो सूचित कर दीजिये – मैं आ जाऊंगा। (**तपाक से हाथ मिलाता है**) आवभगत और स्नेह के लिये धन्यवाद ... सभी चीज़ों के लिये धन्यवाद। (**आया के पास जाकर उसका सिर चूमता है**) विदा, आया।

मरीना : तो क्या चाय पिये बिना ही चले जाओगे ?

आस्त्रोव : मन नहीं है।

मरीना : शायद थोड़ी वोद्का पीना चाहोगे ?

आस्त्रोव (असमंजस में) : शायद ...

(**मरीना जाती है**)

(**थोड़ी ख़ामोशी के बाद**) मेरी घोड़ी कुछ लंगड़ाने लगी है। कल जब पेत्रूश्का उसे पानी पिलाने ले जा रहा था तो इस बात की तरफ़ मेरा ध्यान गया।

वोय्नीत्स्की : फिर से नालबन्दी करवानी चाहिये।

आस्त्रोव : रोज्देस्तवेन्नोये गांव में लुहार के यहां जाना पड़ेगा। इसके बिना काम नहीं चलेगा। (**अफ़्रीका के नक़्शे के पास जाकर उस पर नज़र डालता है**) इस अफ़्रीका में तो इस वक़्त ख़ूब ज़ोर की गर्मी पड़ रही होगी – भयानक चीज़ है गर्मी !

वोय्नीत्स्की : हां, शायद।

मरीना (ट्रे लिये हुए आती है। उसमें वोद्का से भरा जाम और रोटी का टुकड़ा है) : लो।

(आस्त्रोव वोद्का पीता है)

भगवान तुम्हें लम्बी उम्र दे, भैया। **(बहुत झुककर अभिवादन करती है)** तुम रोटी का एक कौर मुंह में डाल लो।

आस्त्रोव: नहीं, ऐसे ही ठीक है... तो मैं चल दिया! **(मरीना से)** तुम मुझे छोड़ने नहीं जाओ, आया, इसकी ज़रूरत नहीं। **(वह जाता है। सोन्या उसे विदा करने के लिये मोमबत्ती लेकर उसके पीछे-पीछे जाती है; मरीना अपनी आराम-कुर्सी पर बैठ जाती है)**

वोय्नीत्स्की (लिखता है): "२ फ़रवरी को २० पौण्ड वनस्पति तेल... १६ फ़रवरी को २० पौण्ड वनस्पति तेल... कूटू का दलिया..."

(ख़ामोशी।
घण्टियों की आवाज़ सुनाई देती है)

मरीना: चला गया।

सोन्या (लौटती है, मोमबत्ती को मेज़ पर रखती है): चला गया...

वोय्नीत्स्की (गिनतारे पर गिनती करने के बाद लिखता है): तो कुल जोड़ हुआ... पन्द्रह... पचीस...

(सोन्या बैठकर लिखती है)

मरीना (जम्हाई लेती है): हे मेरे भगवान...

(तेलेगिन पंजों के बल आता है, दरवाज़े के पास बैठकर गिटार को धीरे-धीरे सुर करता है)

वोय्नीत्स्की (सोन्या के सिर पर हाथ फेरकर उससे कहता है) : मेरी बिटिया, कितना दुखी हूं मैं! ओह, काश तुम जानतीं कि कितना दुखी हूं मैं!

सोन्या : लेकिन हो ही क्या सकता है, जीना होगा!

(ख़ामोशी)

मामा वान्या, हम जियेंगे। बहुत, बहुत दिनों तक, बहुत, बहुत रातों तक जियेंगे, बड़े सब्र से क़िस्मत की सभी आज़माइशों को बर्दाश्त करेंगे, सुख-चैन से अनजान रहकर अब और बुढ़ापे में भी दूसरों के लिये ख़ून-पसीना एक करेंगे तथा जब हमारी आख़िरी घड़ी आयेगी तो नम्रता से मौत के सामने सिर झुका देंगे। दूसरी दुनिया में पहुंचकर हम कहेंगे कि हमने बहुत दुख-दर्द सहा, कि हमने बहुत आंसू बहाये, कि हमने बहुत कड़ुवे घूंट पिये। तब भगवान को हम पर रहम आ जायेगा और तब, हम, मामा जी, प्यारे मामा ज़ी, बहुत ही अच्छी, बहुत ही प्यारी, बहुत ही मधुर ज़िन्दगी से हमारी पहचान हो सकेगी, हमें बेहद ख़ुशी मिलेगी और हम अपने इस समय के दुर्भाग्य को द्रवित होकर, मुस्कराकर देखेंगे – और चैन की सांस लेंगे। मैं विश्वास करती हूं, मामा जी, मुझे पूरा यक़ीन है, पक्का यक़ीन है... **(उसके सामने घुटनों के बल हो जाती है और सिर को उसके हाथों पर टिका देती है, थकी-थकी आवाज़ में)** हम चैन की सांस लेंगे!

(तेलेगिन धीरे-धीरे गिटार बजाता है)

हम चैन की सांस लेंगे! हम फ़रिश्तों का गान सुनेंगे, हम रत्न-जटित आकाश देखेंगे, हम देखेंगे कि कैसे धरती की सारी बुराई,

हमारी सभी यातनायें सारी दुनिया में व्याप्त हो जानेवाले दया के महासागर में डूब जायेंगी और हमारा जीवन शान्त, सुखद और स्नेह की भांति मधुर हो जायेगा। मुझे विश्वास है, इसका विश्वास है... (**रूमाल से उसके आंसू पोंछती है**) बेचारे, बेचारे मामा वान्या, आप रो रहे हैं... (**आंसू भरकर**) आपने अपने जीवन में कोई खुशी नहीं जानी, लेकिन थोड़ा धीरज रखिये, मामा वान्या, थोड़ा धीरज रखिये... हम चैन की सांस लेंगे... (**उसका आलिंगन करती है**) हम चैन की सांस लेंगे।

(**चौकीदार डंडे से आवाज़ करता है**)

(**तेलेगिन धीरे-धीरे गिटार बजाता है। मारीया वसील्येव्ना पुस्तिका के हाशियों पर कुछ लिखती है; मरीना जुर्राब बुनती है**)

हम चैन की सांस लेंगे!

(**परदा धीरे-धीरे गिरता है**)